पुस्तिका के उपयोग हेतु शिक्षकों के लिए निर्देश

एस.आई.क्यू.ई. के अंतर्गत प्राथमिक स्तर हेतु पाठ्यक्रम, टर्मवार पाठ्यक्रमणीय एवं अधिगम उद्देश्य एवं पाठवार उद्देश्य को आपके मार्गदर्शनार्थ प्रस्तुत किया गया है। यह पुस्तिका नवीन पाठ्यक्रम एवं पाठ्यपुस्तकों को ध्यान में रखकर तैयार की गई है। इसके प्रभावी उपयोग हेतु निम्नांकित महत्त्वपूर्ण बिन्दुओं पर ध्यान आकर्षित किया जा रहा है–

1. प्रस्तुत पुस्तिका में कक्षा 1 व 2 तथा कक्षा 3 से 5 का पाठ्यक्रम दिया गया है।
2. टर्मवार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्यों को विभाजित किया गया है ताकि हम निर्धारित समयावधि में समुचित अधिगम गतिविधियों का आयोजन कर सकें।
3. पाठों से संबंधित संभावित उद्देश्य दिए गए हैं, शिक्षक विषय वस्तु के अनुरूप अन्य उद्देश्यों का निर्धारण भी कर सकते हैं।

पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं अधिगम उद्देश्यों की आवश्यकता क्यों ?

''निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिगम'' के अन्तर्गत बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलग्ध कराने का दायित्व हम सबका है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को सुनिश्चित करने में विद्यालय, शिक्षक बच्चे, पाठ्यपुस्तकें, प्रशिक्षण, मॉनिटरिंग, अकादमिक संबलन आदि सभी की महत्वपूर्ण भूमिकाएं हैं। अतः आवश्यक है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु उक्त सभी आयाम मिलकर समन्वित रूप से अपनी–अपनी भूमिका का निर्वाह पूर्ण निष्ठा से करें।

इसी क्रम में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन. सी. एफ. 2005) के प्रमुख मार्गदर्शक सिद्धान्तों को आधार मानते हुए राज्य में नवीन पाठ्यपुस्तकों का निर्माण किया गया, जिन्हें सत्र 2016–17 से कक्षा 1 से 8 तक की कक्षाओं में लागू किया जा रहा है। मार्गदर्शक सिद्धान्त निम्नानुसार हैं –

- ज्ञान को विद्यालय के बाहरी जीवन से जोड़ना।
- पढ़ाई रटन्त प्रणाली से मुक्त हो, यह सुनिश्चित हो।
- पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तक केन्द्रित नहीं होकर, बच्चों को बहुआयामी विकास के अवसर प्रदान करने वाली होनी चाहिए।
- मूल्यांकन का स्वरूप लचीला एवं गतिविधि आधारित हो।
- बालक में कक्षा के स्तरानुकूल दक्षताओं का विकास हो।

प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम को दो चरणों (कक्षा 1 व 2 एवं कक्षा 3, 4, 5) में विभाजित किया गया। सीखने–सिखाने की प्रक्रिया में सतत एवं व्यापक आकलन करना अनिवार्य है जिससे कि बच्चे निरंतर किस प्रकार व क्या सीख रहे हैं को देखा जा सके। बच्चे ने वर्ष के अन्त तक क्या और कितना सीखा है को भी अन्तिम योगात्मक मूल्यांकन के आधार पर देखा जा सके ताकि इस आधार पर बच्चे को अगली कक्षा में क्रमोन्नत करने के साथ–साथ उसके स्तर के अनुसार योजना बनाकर काम किया जा सके। यद्यपि पाठ्यक्रम में कक्षा 2 के अन्त तक, तथा कक्षा 5 के अन्त तक कक्षा 8 के अन्त तक विकसित हो जाने वाली अवधारणाओं/क्षमताओं/कौशलों/दक्षताओं का विवरण दिया गया है। किन्तु यह भी महसूस किया जा रहा है कि बच्चों में विषय एवं कक्षावार प्रतिवर्ष विकसित हो जाने वाली अवधारणाओं/क्षमताओं/कौशलों/दक्षताओं का विवरण भी दिया जाए ताकि शिक्षक/शिक्षिकाओं द्वारा वर्ष के अन्त में बच्चों का

समेकित आकलन कर यह देखा जा सके कि बच्चे को अगली कक्षा में क्रमोन्नत करने के साथ–साथ उसके स्तर के अनुसार क्या और किस तरह काम किया जाना है।

इस दस्तावेज के आधार पर शिक्षक/शिक्षिकाएँ यह बहुत सहज एवं अच्छे तरीके से समझ सकते हैं कि कक्षावार बच्चे में कौन–कौन सी और किस स्तर तक की अवधारणाओं/क्षमताओं/कौशलों/दक्षताओं को विकसित किया जाना है। साथ ही शिक्षक/शिक्षिकाएँ पाठ्यपुस्तक में दी गई सामग्री, पाठ्यपुस्तकों से इतर सामग्री, कक्षाकक्ष में तथा कक्षाकक्ष से बाहर की जाने वाली गतिविधियों की क्या तैयारी करनी है और इनका कब–कब और किस प्रकार उपयोग करना है ताकि बच्चों में कक्षानुसार अवधारणा/क्षमता/कौशल/दक्षता विकसित हो सके। यह दस्तावेज मुख्य रुप से शिक्षक/शिक्षिकाओं के लिए तैयार किया गया है। शिक्षक/शिक्षिकाएँ यह समझे कि हमारा उद्देश्य बच्चों को पाठ्यपुस्तक पढ़ाकर पूरा कराना नहीं है बल्कि पाठ्यपुस्तक का उपयोग करते हुए बच्चों में अवधारणाओं/क्षमताओं/कौशलों/दक्षताओं को विकसित करना है। उम्मीद है कि शिक्षक/शिक्षिकाओं को इससे बच्चों के साथ पाठ्यक्रम के अनुसार योजना बनाने में, काम करने में तथा मूल्यांकन करने में मदद मिल पाएगी। यहाँ पर विषय एवं कक्षावार (कक्षा 1 से 5 तक) अवधारणाओं/क्षमताओं/कौशलों/दक्षताओं का विवरण दिया गया है। शिक्षक/शिक्षिकाओं से अपेक्षा है वे इसे अनिवार्य रुप से पढ़े, समझे और बच्चों में कक्षावार अवधारणाओं/ क्षमताओं/ कौशलों/ दक्षताओं को विकसित करें।

भाषा शिक्षण के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, टर्मवार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य एवं पाठवार उद्देश्य

हमारी दिनचर्या में भाषा प्रत्येक गतिविधि और व्यवहार में किसी न किसी रूप में मौजूद रही है। दुनिया को अर्थ देने और दुनिया को समझने का काम हम भाषा के माध्यम से ही कर पाते हैं। नया सीखने, ज्ञान–निर्माण, नई कल्पनाएं व नए विचार सृजित करने में भाषा महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पूर्व अनुभवों की व्याख्या करने, उन्हें व्यवस्थित करने का काम भाषा के माध्यम से ही संभव हो पाता है। नया सीखने में हम अपनी पूर्व अर्जित अवधारणाओं के माध्यम से नई वस्तु को समझने की कोशिश करते हैं और नई अवधारणाएँ गढ़ते हैं। नया सीखने एवं ज्ञान–निर्माण की इस पूरी प्रक्रिया में चिंतन करना, समानता–असमानता देख पाना, तुलना करना, परस्पर संबंध देखना, तर्क करना तथा अपना स्वयं का विचार बना पाना आदि काम संपादित होते हैं। ये सब भाषा के माध्यम से संभव हो पाते हैं। व्यक्ति प्रायः अपने कार्य व गतिविधि को भाषा का उपयोग करके ही पूरा करता है। विद्यालय में भाषा शिक्षण से बच्चे को न केवल भाषा के विभिन्न कौशलों के विकास में सहायता मिलती है, बल्कि अन्य विषयों को सीखने में भी मदद मिलती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 की भाषा शिक्षण के संदर्भ में संस्तुतियाँ हैं कि सार्थक संदर्भों से भाषा शिक्षण की शुरूआत की जाए, बहुभाषिकता का संसाधन के रूप में उपयोग किया जाए, भाषा शिक्षण हेतु समग्रतावादी दृष्टिकोण अपनाया जाए तथा संदर्भ में व्याकरण पर समझ बनाई जाए। भाषा शिक्षण के उद्देश्य इस प्रकार हैं –

- बच्चों की घरेलू भाषा व मानक भाषा के बीच जुड़ाव स्थापित करना।
- बच्चों को अपने शब्दों में (मौखिक व लिखित) अभिव्यक्ति के अवसर उपलब्ध करवाना।
- बच्चों को प्रश्न पूछने और अपनी बात कहने के भरपूर अवसर उपलब्ध करवाना।

- बच्चों में दूसरों की बात सुनने में रुचि और धैर्य उत्पन्न करना तथा सुनी हुई बात का विश्लेषण कर आत्मविश्वास से टिप्पणी कर पाना।
- बच्चों के भाषायी पूर्व ज्ञान को तरजीह देते हुए उसके उपयोग के नए संदर्भ व संभावनाएं खोलना।
- बच्चों के दैनिक जीवन के अनुभवों द्वारा नये अनुभवों से परिचित करवाना।
- विभिन्न संस्कृति व वर्गों के बच्चों के अनुभवों से परस्पर सीखने के अवसर उपलब्ध करवाना।
- पढ़ने के प्रति ललक उत्पन्न करना तथा इसके लिए सार्थक व रोचक संदर्भ उपलब्ध करवाना।
- परिवेश में विभिन्न मुद्दों पर प्रचलित धारणाओं को परखने के अवसर देना एवं उन पर तार्किक रूप से सोचने के अवसर उपलब्ध करवाना।
- नई विधाओं से परिचय करवाना।
- साहित्यिक अभिरुचि विकसित करना।
- परिवेशीय सजगता विकसित करना।
- बच्चों में सहिष्णुता, कला, सौंदर्य के प्रति अभिरुचि उत्पन्न करना।
- बच्चों को साहित्यिक भाषा में लिखने हेतु प्रेरित करना।

पाठ्यक्रम विभाजन के अन्तर्गत दी गई तालिका में टर्मवार पढ़ाए जाने वाले पाठों/इकाई का नाम, पाठवार अधिगम उद्देश्य, अधिगम क्षेत्र एवं इन पाठों को पढ़ाए जाने हेतु अनुमानित कालांशों को दिया गया है। अतः शिक्षक से अपेक्षा है कि इस पुस्तिका का उपयोग करते हुए अपने शिक्षण की योजना बनाए तथा समय–समय पर उसकी समीक्षा कर अपनी योजना में परिवर्तन करते हुए प्रत्येक बालक में निर्धारित अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति सुनिश्चित करें।

नोट – पाठवार अधिगम उद्देश्य के आगे अंकित "शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश" समूह एक की शिक्षण योजना निर्माण हेतु प्रस्तावित किए गए हैं। समूह दो की शिक्षण योजना हेतु कालांश निर्धारण शिक्षक अपनी वास्तविक आवश्यकता अनुसार निर्धारित कर सकता है।

पाठ्यक्रम कक्षा 1 से 2

बोलना–सुनना

1. भाषा की विविध विधाओं, जैसे – गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप, संवाद, चित्र व दृश्य पर चर्चा आदि को सुनकर आनंद प्राप्त करना।
2. ध्यान से एवं धैर्यपूर्वक समझना।
3. परिवेश एवं संदर्भ से संबंधित सामग्री को समझना।
4. सुनने के शिष्टाचार का पालन करना।
5. गति एवं हाव–भाव के अनुसार बोलना।
6. परिचित एवं नवीन परिस्थितियों में सहजता से अपने विचार प्रस्तुत करना।
7. अपने विचार, अनुभवों एवं कल्पना को अपने शब्दों में प्रस्तुत करना।
8. प्रश्न बनाना व पूछना।
9. घर, परिवेश एवं विद्यालय की भाषा में तालमेल बैठाकर अपने अनुभव व्यक्त करना।
10. सुनी हुई बात को अपने शब्दों में कहना।
11. पढ़ी गई सामग्री को अपने शब्दों में कहना।
12. गीत, कविता, कहानी व अपने विचारों को अकेले तथा समूह में प्रस्तुत करना।
13. सुने हुए गीत, कविता, कहानी, वार्तालाप आदि में अपने अनुभवों को जोड़कर अपनी बात कहना।
14. अपने घर, परिवार, विद्यालय एवं परिवेश में होने वाली समूह चर्चा में भाग लेना और अपने विचार प्रस्तुत करना।
15. अपने अनुभव एवं कल्पनालोक की बातों को सहज ढंग से कहना।
16. सुनी, पढ़ी सामग्री में क्या, कौन, कब, कैसे, कहाँ जैसे प्रश्न पूछ पाना एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना।
17. कविता, कहानी को अपनी कल्पना से आगे बढ़ाते हुए बोलना।
18. ध्वन्यात्मक शब्दों के साथ खेलने व गढ़ने के अवसर का लाभ उठाना, जैसे– अक्कड़–बक्कड़, हल्लम–चल्लम।

पढ़ना

1. पढ़ने की ललक होना।
2. अनुमान लगाकर पढ़ना एवं अर्थ खोजना।

3. बच्चे द्वारा शब्दों और वाक्यों को वर्ण जोड़कर पढ़ने की बजाय इकाई के रूप में समझकर पढ़ना।
4. अपने परिवेश में उपलब्ध सामग्री को अनुमान लगाकर समझते हुए पढ़ना। जैसे– दीवार श्यामपट्ट, साइनबोर्ड आदि।
5. परिवेश में उपलब्ध संदर्भों, चित्रों व छपी हुई सामग्री को पढ़कर समझना।
6. शब्दों में आपसी सह–संबंध स्थापित करते हुए प्रसंग के अनुसार पढ़ना।

लिखना

1. शब्द और वाक्य स्पष्ट रूप से लिख सकना।
2. परिवेश व संदर्भों के अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना।
3. किसी कविता या कहानी को आगे बढ़ाते हुए लिखना।
4. सुनी हुई विषयवस्तु व अनुभवों को अपने शब्दों में लिखना।
5. प्रश्नों के उत्तर अपने शब्दों में लिखना।
6. सुनी हुई विषयवस्तु को यथारुप लिखना।
7. तार्किक चिन्तन के आधार पर सरल रचनाएँ करना एवं अपनी बात लिखना।
8. कल्पनाशीलता के आधार पर गीत, कविता कहानी, चुटकुले आदि की रचना कर पाना।

व्यावहारिक व्याकरण

व्याकरण की अवधारणाओं की अमूर्त परिभाषाएँ याद करने से अधिक महत्त्वपूर्ण उन्हें वास्तविक संदर्भों में समझना है। इसलिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा–2005 संदर्भ के अनुसार व्यावहारिक अवधारणाओं को समझने और उनके प्रयोग पर बल देती है।

व्याकरण के बिन्दु–चंद्र बिंदु, अनुस्वार, विसर्ग, संयुक्ताक्षर, 'र' के रूप, विराम चिह्न, पूर्ण विराम, अल्प विराम, प्रश्नवाचक चिह्न, लिंग, वचन आदि को पहचानना तथा प्रयोग में लाना।

पाठ्यक्रम कक्षा 3 से 5

बोलना–सुनना

1. दूसरों के विचार को ध्यान से और धैर्य के साथ सुनकर अपनी सोच विकसित करना।
2. किस्से–कहानियाँ सुनकर आनंद प्राप्त करना।
3. ऐतिहासिक घटनाएँ सुनकर अपनी सांस्कृतिक धरोहर के बारे में जानना।
4. कविताएँ सुनकर उसके अर्थ एवं भाव को समझना एवं आनन्द की अनुभूति करना।
5. नए शब्दों को सुनकर उनके अर्थ समझना।
6. रोचक कहानी–कविता आदि सुनकर अपने अनुभव में वृद्धि करना।
7. सुने गए भावों–विचारों पर चिन्तन करना।
8. सहज रूप से अपनी बात कह पाना।
9. परिस्थिति एवं अवसर के अनुरूप अपनी बात कह सकना।
10. सशक्त रूप से अपनी बात कहना।
11. बोलने के शिष्टाचार का पालन करना।
12. गीत–कविता आदि को लय–ताल के साथ बोलना।

पढ़ना

1. पढ़ने के प्रति रुचि होना।
2. पढ़ते समय अपरिचित शब्दों का संदर्भ के आधार पर अनुमान लगाना।
3. साहित्य की विभिन्न विधाओं यथा–कहानी, गीत, संवाद, निबंध आदि से परिचित होकर उन विधाओं की अन्य पुस्तकें पढ़ना।
4. पुस्तकालय संबंधी सक्रियता होना।
5. दूसरों के विचारों को पढ़कर समझना।
6. पठन द्वारा आनन्द–प्राप्ति में समर्थ होना।
7. पाठ में निहित मूल भाव, विचार या बिन्दु को समझना।
8. विषय–सामग्री के माध्यम से नए शब्दों का अर्थ जानना।
9. नए शब्दों के अर्थ शब्दकोष मे ढूँढना।
10. विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भों से जुड़ना।
11. परिवेश में उपलब्ध पाठ्य सामग्री के प्रति अभिरूचि उत्पन्न करना।

12. पाठ्य सामग्री द्वारा प्रजातांत्रिक मूल्यों के प्रति जागरूकता उत्पन्न होना।
13. पाठ्य सामग्री, (अखबार, पत्र–पत्रिका आदि) को पढ़कर उन पर प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
14. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (जैसे– टी.वी., इन्टरनेट, मोबाइल), परिवेश में उपलब्ध विज्ञापन आदि को पढ़कर समझ विकसित होना।

लिखना

1. स्पष्टता से लिखना।
2. प्रश्न के अनुरूप उत्तर को अपने शब्दों में लिखना।
3. आत्मविश्वास के साथ लिखना।
4. भावों, विचारों, अनुभवों व चिन्तन को अपने शब्दों में लिखना।
5. विषय के अनुसार विचारों की लिखित अभिव्यक्ति करना।
6. विभिन्न परिस्थितियों/काल्पनिक घटनाओं को अपने शब्दों में लिख पाना।
7. सुनकर लिख पाना।
8. विभिन्न अवसरों पर निबंध, कहानी, कविता, स्लोगन लेखन आदि प्रतियोगिताओं में भाग लेकर अपनी रचनात्मक अभिवृति का विकास करना।
9. कविता, कहानी आदि का सृजन करना।
10. किसी कविता, आदि को आगे बढ़ाना।

परिवेशीय सजगता

1. प्राकृतिक और अन्य घटनाओं के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करना।
2. देखी सुनी घटनाओं के घटनाक्रम को समझना और समझाना।
3. आस–पास मौजूद हालातों आदि के बारे में सवाल करना।
4. अपने आस–पास मौजूद पशु–पक्षियों, पेड़–पौधों, इस्तेमाल की वस्तुओं, लोगों (बुजुर्गों, महिलाओं, दोस्तों) के प्रति सम्मान, मित्रता, सहिष्णुता का भाव रखना।
5. व्यक्तिगत, घरेलू और विद्यालय स्तर पर चीज़ों के व्यर्थ इस्तेमाल को रोकना।

व्यावहारिक व्याकरण

व्याकरण के बिन्दु

शब्द भण्डार में वृद्धि हेतु नए शब्द, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, पर्यायवाची, विलोम, शब्द, लिंग, वचन, कारक, उपसर्ग, प्रत्यय आदि की समझ विकसित करना। कक्षा स्तरानुरूप मुहावरे, लोकोक्तियों व कहावतों का प्रयोग तथा विराम चिह्न आदि की पहचान तथा इनका संदर्भ में उपयोग कर पाना।

कक्षा एवं टर्मवार पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य

कक्षा– 1

पाठ संख्या	अधिगम क्षेत्र/आकलन सूचक	पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/ विषयवस्तु
		प्रथम टर्म
आरंभिक गतिविधियाँ एवं पाठ संख्या 1–4	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सुनी हुई सरल छोटी कविता/बालगीत/कहानी को स्पष्ट शब्दों में दोहरा सकें। • कविता/बालगीत को लय, गति और हावभाव का तालमेल करते हुए सुना सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• चित्रों की सहायता से चित्र के नाम की आकृति (शब्द) का पठन कर सकें। • चित्र की मदद से परिचित शब्दों को पढ़कर मिलान कर सकें और परिचित शब्दों को स्वतंत्र रूप से (बिना चित्र की सहायता से) पहचान कर सकें एवं पढ़ सकें। • शब्दों से संबंधित वर्णों को पढ़ सकें। • आ व ई की मात्रा की अवधारणा के साथ चित्र व बिना चित्र की सहायता से शब्दों को पढ़ सकें। • संबंधित तुकबंदियों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें।
	लिखना	• दिए गए अक्षर/शब्दों पर पेंसिल फेर सकें। • अक्षर/सरल शब्दों को देखकर लिख सकें। • चित्र की मदद से शब्दों को लिख सकें। • सीखे गए वर्णों से शब्द बनाकर लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• चित्रों में रंग संयोजन कर सकें। • अपने मन से परिचित वस्तु का चित्र बना सकें।
		द्वितीय टर्म
पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तक	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• संबंधित स्तर के अनुरूप सुझाई गई कहानी/कविता को पहल करके स्वयं सुनाने की तत्परता रख सकें। • दिए गए निर्देशों (सरल) को समझ कर अनुपालना कर सकें। • संबंधित कविता/कहानी/विवरण सुनकर मौखिक प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दे सकें। • चित्रों को देखकर त्योहारों के बारे में बता सकें।

पाठ संख्या 5–9 एवं पाठों से पूर्व की गतिविधियाँ	पढ़ना और पढ़कर समझना	• बिना चित्र की सहायता से मात्रायुक्त शब्दों को पढ़ सकें। • पढ़ते समय सीखे गए बिना मात्रा व मात्रायुक्त शब्दों को बिना रुके हुए प्रवाह के साथ बोल सकें (रतन, कमला, दीदी, ईख.....आदि) • पूर्व टर्म में सीखे हुए सभी परिचित शब्दों की इकाई ध्वनियों की पहचान के साथ वर्ण को पढ़ सकें। • चित्र की सहायता से नए कुंजी शब्दों एवं कुंजी वर्णों को पढ़ सकें। • सीखे गए शब्दों से बने वाक्यों को पढ़ सकें।
	लिखना	• दो/तीन/चार अक्षरयुक्त सरल अपरिचित नए शब्दों का लेखन कर सकें एवं सरल वाक्यों को देखकर लिख सकें। • पूर्व में सीखे गए सभी शब्दों व वर्णों का श्रुतलेख कर सकें एवं सीखी गई मात्रायुक्त शब्दों को बिना देखे लिख सकें। • आ, इ, ई, ओ, उ, ऊ की मात्रा से बनने वाले शब्दों का लेखन कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• स्तरानुरूप दी गई कविता/कहानी को सुनकर उसके अनुसार चित्र बना सकें। • कहानी/परिचित घटना स्थिति का अभिनय कर सकें। • दी गई आकृतियों में रंग संयोजन कर सकें।
तृतीय टर्म		
पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तक पाठ संख्या 10–14 एवं पाठों से पूर्व की गतिविधियाँ	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• चित्र, अनुभव, कहानी आदि का वर्णन करते समय बिना झिझक के सुसंगत शब्दों का इस्तेमाल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • चल रही बातचीत में अपना मत रख सकें एवं सुनी हुई बात को अपने शब्दों में बता सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• सीखे गए वर्णों की सहायता से सरल लेकिन अपरिचित शब्दों को पढ़ सकें। • छोटी कविता की पंक्तियों को अनुमान लगाकर पढ़ सकें। • बिना चित्र की सहायता से सीखी गई सभी मात्राओं से संबंधित शब्दों का पठन कर सकें।
	लिखना	• सरल शब्दों का श्रुतलेख कर सकें सीखे गए मात्रायुक्त शब्दों को बिना देखे लिख सकें। • सीखे गए वर्णों से नए दो/तीन/चार अक्षरयुक्त सरल अपरिचित नए शब्दों का लेखन एवं सरल वाक्यों को देखकर लिख सकें।

		• चित्र देखकर दो या तीन शब्दों के माध्यम से एक वाक्य लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• मिट्टी या अन्य वस्तुओं के प्रयोग से चीज़ें बना सकें। • सरल चित्रों को पेंसिल फेरकर पूरा कर सकें एवं अनुकरण से सरल चित्र बना सकें। • अपने मनपसंद या किसी पात्र का अभिनय कर सकें। • दी गई आकृतियों में रंग संयोजन कर सकें।
चतुर्थ टर्म		
पुस्तकालय या अन्य संदर्भ पुस्तकें एवं पाठ्यपुस्तक पाठ संख्या 15–16एवं पाठों से पूर्व की गतिविधियाँ	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सही वाक्य संरचना के सुनी हुई बात पर अपनी राय व्यक्त कर सकें। • सुनकर सरल प्रश्नों का उत्तर देने की तत्परता/पहल कर सकें। जैसे– आपको क्या अच्छा लगता है, आपके मम्मी–पापा क्या काम करते हैं, सुबह से शाम तक क्या–क्या काम करते हो? आदि • पूछे गए प्रश्नों का एक वाक्य में उत्तर दे सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• विभिन्न सरल लघु–दीर्घ मात्रायुक्त शब्दों को पढ़कर समझ सकें। (मात्रा ध्वनि के अंतर के साथ) • सीखी गई मात्राओं से बने सरल वाक्यों को धीमी गति के साथ पढ़ सकें। • शब्दों और छोटे–छोटे वाक्यों को प्रवाह के साथ पढ़ सकें। • छोटी कविताओं/कहानियों को पढ़ने का प्रयास कर सकें।
	लिखना	• लघु व दीर्घ मात्राओं की ध्वनि के अन्तर को सुनकर शब्दों को लिख सकें। (इ, ई तथा उ, ऊ की) • सरल वाक्यों को स्वयं लिख सकें। • तुक वाले (अन्त में एक जैसी ध्वनि वाले) शब्दों का लेखन कर सकें। • सीखे गए शब्दों को वर्णमाला के क्रम से लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• मिट्टी या अन्य वस्तुओं के प्रयोग से चीज़ें बना सकें। (पूर्व से ज्यादा सफाई से) • अनुकरण से सरल चित्र बना सकें। (आसानी से पूर्व की अपेक्षा समय कम लगाकर) • कहानी आदि के पात्रों का अभिनय कर सकें।

कक्षा – 2

पाठ संख्या	अधिगम क्षेत्र/आकलन सूचक	पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
		प्रथम टर्म
पुनरावृति गतिविधियाँ एवं पाठ संख्या 1 से 6	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सुनी हुई कविता, कहानी को हाव–भाव के साथ अपने शब्दों में सुना सकें। • सुनकर प्रश्नों के उत्तर देने की पहल कर सकें। • समूह चर्चाओं में पहल कर सकें और अपनी भाषा में अपनी बात व्यक्त कर सकें।
	पढ़ना और समझना	• विभिन्न प्रकार की मुद्रित सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ सकें। • सीखे गए शब्दों से वाक्यों को बिना रुके प्रवाह के साथ पढ़ सकें और समझ सकें।
	लिखना	• सीखी गई मात्राओं का प्रयोग करते हुए शब्द एवं सरल वाक्य लिख सकें। • विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों के उत्तर लिख कर सकें। • सीखे गये शब्दों का प्रयोग कर सरल वाक्य स्वयं लिख सकें । • विषयवस्तु के अनुसार तीन–चार वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अपने मन से स्तरानुसार कविता, कहानी को सुनकर चित्र बना सकें व रंग भर सकें। • विभिन्न वस्तुओं का इस्तेमाल करते हुए चित्रादि बना सकें। • दिये गये चित्रों में रंग भर सकें।
		द्वितीय टर्म
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठों से पूर्व की	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• अपने परिवेश में सुनी कविता, कहानी, व घटनाक्रम को क्रमबद्धता के साथकह सकें। • उचित गति को ध्यान रखते हुए सही वाक्य संरचना के साथ विभिन्न संदर्भों के बारे में बता सकें। • कक्षा कक्षीय चर्चा को ध्यान से सुन सकें और अपनी बात को स्पष्टता के साथ अपनी भाषा में रख सकें।
	पढ़ना और समझना	• चित्र, कहानी, कविता एवं निबंध आदि को आनन्द व रुचि के साथ पढ़ सकें।

गतिविधियाँ एवं पाठ संख्या 7 से 10		• संयुक्ताक्षरो को पहचानते हुए लघु एवं दीर्घ मिश्रित मात्रा युक्त शब्द एवं सरल वाक्यों को पढ़ सकें। लोकगीतों में आये कठिन शब्दों को पढ़ सकें और उनका अर्थ जान सके। • पढ़ी हुई कहानी, कविता एवं निबंध को पढ़कर बोल सकें और पात्रों पर चर्चा कर सकें।
	लिखना	• सीखी गई सभी मात्राओं की ध्वनि को पहचानते हुए शब्दों का लेखन कर सकें। • परिचित, अपरिचित शब्दों/वाक्यों का श्रुतलेखन कर सकें। • प्रश्नों को सुनकर व पढ़कर छोटे वाक्यों में उत्तर लिख सकें । • विषयवस्तु से संबधित 3–4 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• विभिन्न प्रकार के चित्रों में अपनी कल्पना के आधार पर रंग संयोजन कर सकें। • डाट्स को मिलाकर विषयवस्तु के आधार पर स्वयं चित्र बना सकें और रंगों का समायोजन कर सके।
तृतीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 11 से 14	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• विभिन्न कविताओं को हावभाव एवं लय के साथ सामूहिक रूप से सुना सकें, • विषयवस्तु से संबंधित निर्देशों को सुनकर समझ सकें एवं उनकी अनुपालना करसकें। • चित्रों एवं विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु से जुड़े प्रसंगों के संदर्भ में चल रही चर्चा में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख सकें एवं सुनी हुई घटनाओं को अपने शब्दों में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर सकें।
	पढ़ना और समझना	• पाठ्य सामग्री को आनन्द के साथ पढ़ सकें। • लघु व दीर्घ मात्राओं की ध्वनियों को पहचानते हुए छोटी कहानी/कविता को पढ़ कर सुना सकें। • निर्देशों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर सकें।
	लिखना	• सीखी गयी मात्राओं एवं वर्णों का प्रयोग करते हुए परिचित एवं अपरिचित शब्दों ववाक्यों को लिख सकें। (स्वयं, श्रुतलेख एवं देखकर)

		• प्रश्नों के उत्तर लिख सकें। संदर्भ के अनुसार 4 से 6 वाक्यों में अपनी बात कोलिख सकें। • छोटी–छोटी कहानी, कविता का सृजन कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• स्वयं चित्र बना सकें एवं कल्पना के आधार पर सफाई के साथ रंग संयोजन करसकें। • विभिन्न प्रकार के मुखौटे बना सकें। (शेर और चूहा) • अभिनय और विभिन्न प्रकार की आवाजों को निकालने का प्रयास कर सकें।
चतुर्थ टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 15–16	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• विभिन्न प्रकार की कविताओं को हावभाव एवं लय के साथ सामूहिक रूप से पहल के साथ सुना सकें। • विभिन्न प्रसंगों के संदर्भ में चल रही चर्चा में अपनी बात को स्पष्टता के साथ रख सकें। • सुनी या पढ़ी हुई विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु को अपने शब्दों में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के सवालों के जवाब बिना किसी झिझक के अभिव्यक्त कर सकें।
	पढ़ना और समझना	• भाव के अनुसार उचित बल देते हुए कविता/कहानी को लघु–दीर्घ मात्रायुक्त शब्दों, संयुक्ताक्षरों आदि को उनके उच्चारण भेद एवं विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए पढ़ कर सुना सकें। • विभिन्न प्रकार की कविताओं/कहानियों/चुटकुलों को आनन्द के साथ पढ़ सकें।
	लिखना	• किसी चित्र और घटना के बारे 4–6 वाक्य लिख सकें एवं प्रश्नों को सुनकर/पढ़कर वाक्यों में उत्तर लिख सकें। • विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु से संबंधित शब्दावलियों को स्वयं के परिवेशीय शब्दों में लिख सकें। • कहानी एवं कविता की रूप रेखा को क्रमबद्धता एवं तुकबंदी से लिख सके।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• विषयवस्तु के आधार पर स्वयं चित्र बना सकें एवं उचित रंग संयोजन कर सकें। • विभिन्न प्रकार के मुखौटे बना सकें एवं परिवेशीय विभिन्न आवाजों को निकाल सकें।

कक्षा–3

पाठ संख्या	अधिगम क्षेत्र/आकलन सूचक	पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
		प्रथम टर्म
आरंभिक गतिविधियाँ एवं पाठ संख्या 1–6	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सुनी/पढ़ी कविता, गीत को लय एवं हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें। • कक्षा–कक्षीय चर्चाओं में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • कविता/कहानी/निबंध को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• उचित गति, स्पष्ट उच्चारण, भाव एवं आनन्द लेते हुए पढ़ सकें। • वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व कक्षा से बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पठित सामग्री की समझ को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें विचारों एवं घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में बता सकें।
	लिखना	• सुन्दर, स्वच्छ एवं उचित विराम चिह्नों का प्रयोग करते हुए किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देख कर 6–8 वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें। • विविध प्रकार के अनुमान एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वयं की भाषा में लिख सकें।
	व्याकरण	• सर्वनाम शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • विभिन्न संज्ञा नामों का वर्गीकरण कर सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में स्वतन्त्र रूप से संज्ञा नाम बता सकें (लिखित/मौखिक)। • पर्यायवाची शब्दों की जानकारी कर सकें। • क्रिया के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकें • र वर्ण के हलन्त रूप को जान सके। • विपरीत अर्थ वाले शब्दों की पहचान कर सकें। • मुहावरों को जान सकें व अर्थ बता सकें।

	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें। • कागज से मुखौटे या अन्य वस्तुएँ बना सकें। • परिवेश से सम्बन्धित विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं संबंधित पात्र के अनुरूप संवाद बोल सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।
द्वितीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठों से पूर्व की गतिविधियां एवं पाठ संख्या 7–10	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में सुनी/पढ़ी कविता, गीत को लय एवं हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल करते हुए अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अपनी भाषा में अभिव्यक्त कर सकें। • कक्षा–कक्षीय चर्चाओं में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• उचित गति, स्पष्ट उच्चारण, प्रभाव एवं आनन्द लेते हुए पढ़ सकें। • वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पुस्तकों को पढ़ने के प्रति पहल कर सकें एवं उससे संबंधित अनुभव कक्षा में बता सकें।
	लिखना	• सुन्दर, स्वच्छ एवं उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देख कर मानक शब्दों का प्रयोग करते हुए 6–8 वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें। • विविध प्रकार के अनुमान एवं कल्पना आधारित प्रश्नों के उत्तर स्वयं की भाषा में लिख सकें। • विचारों, घटनाओं को क्रमबद्ध रूप से लिख सकें।
	व्याकरण	• विशेषण शब्दों की पहचान करते हुए उनका प्रयोग कर सकें। • वचन एवं पर्यायवाची शब्दों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • विशेषण शब्दों की पहचान कर एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • मूलशब्द के साथ शब्द जोड़कर नये शब्द बना सकें। प्रत्यय की पहचान कर सकें।

	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें। • कागज से वस्तुएँ बनाकर उनको बनाने की विधि बता सकें। • परिवेश से सम्बन्धित विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं संबंधित पात्र के अनुरूप संवाद बोल सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।
तृतीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा एवं पाठ संख्या 11–14	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सुनी/पढ़ी कविता, गीत लय और हावभाव एवं पहल साथ स्पष्ट शब्दों के साथ अभिव्यक्त कर सकें। • क्या, कहाँ, कैसे, कौन से, क्यों वाले प्रश्नों के उत्तर पूरे–पूरे वाक्यों में दे सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी को सुनकर उसका सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें। • विभिन्न परिवेशीय एवं सामाजिक मुद्दों पर कक्षा में होने वाली चर्चा में अपनी बात को समूह में व्यक्त कर सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। दिए गए संदर्भ के अनुसार संवाद को कल्पना करते हुए बता सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य पुस्तक एवं पुस्तकालय की पुस्तकों को पढ़ने के प्रति रुचि बन सके तथा विराम चिह्नों को ध्यान में रखते हुए उचित गति व स्पष्ट उच्चारण, भाव के साथ पढ़ सकें। • सरल वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों एवं पहेलियों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • संदर्भ एवं विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में वाक्यों के लिए सही शब्द का चुनाव कर सकें। • पठित विषयवस्तु पर कक्षा में व कक्षा से बाहर अपने दोस्तों के साथ चर्चा कर सकें। • पठित सामग्री में आए नवीन शब्दों/परिवेशीय शब्दों के अर्थ एवं मानक रूप को समझ सकें।
	लिखना	• मानक शब्दों का प्रयोग करते हुए उपयुक्त दूरी, सीधी लाइन, शिरो रेखा के प्रयोग के साथ किसी परिचित घटना/चित्रों आदि को देखकर 6 से 8 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकें। • विषयवस्तु के बढ़ते क्रम में कविता/कहानी के भाव को अपने शब्दों में लिख सकें।
	व्याकरण	• वचन, विशेषण शब्दों, विपरीत अर्थ, सर्वनाम शब्दों, संज्ञा शब्दों एवं पर्यायवाची शब्दों की पहचान कर सकें एवं उनका वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • अनुस्वार व अनुनासिक शब्दों को समझ कर शुद्ध रूप से लिख सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• कागज से अपनी मन पसंद की सामग्री बना सकें। चित्र के अनुसार रंग का संयोजन कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। • देश के प्रति प्रेम, भाईचारा एवं सभी धर्मों का आदर व्यक्त कर सकें।

चतुर्थ टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 15–16	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• सुनी घटना/कहानी/प्रसंग आदि विभिन्न संदर्भों के साथ स्वयं के अनुभवों को जोड़कर अभिव्यक्त कर सकें एवं दूसरों के विचारों को धैर्य के साथ सुन सकें। • विभिन्न संदर्भों में अपनी बात को पसंद या नापसंद के संदर्भ में रख सकें। • सुनी कविता, गीत को लय और हावभाव के साथ स्पष्ट शब्दों में पहल के साथ अभिव्यक्त कर सकें। • कविता/कहानी को सुनकर उसके सार या भाव को अपने शब्दों में बता सकें एवं संवाद बनाकर बोल सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• विराम चिह्न को ध्यान में रखते हुए उचित गति व स्पष्ट उच्चारण, भाव के साथ पढ़ सकें। • सरल वाक्यों/निर्देशों/प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें एवं स्वयं हल कर सकें। • पाठ्य सामग्री को प्रवाह के साथ पढ़ सकें एवं पठित सामग्री की समझ को अपने शब्दों में व्यक्त कर सकें। • पहेलियों को पढ़कर उनके अर्थ का अनुमान लगाकर उत्तर दे सकें तथा विचारों एवं घटनाओं को क्रमबद्ध रूप में बता सकें। • विषयवस्तु को पढ़कर उससे सम्बन्धित जानकारियों को एकत्रित कर सकें एवं पठित सामग्री में आए नवीन शब्दों/परिवेशीय शब्दों के अर्थ एवं मानक रूप को समझ सकें।
	लिखना	• सुन्दर एवं साफ लिखावट के साथ 6 से 8 वाक्यों में अपनी बात को लिख सकें। • विभिन्न प्रकार की विषयवस्तु के आधार पर क्रमबद्धता के साथ स्वयं कहानी लिख सकें। • संदर्भ के अनुसार अपने अनुभवों एवं पूर्व अवलोकित चीज़ों के बारे में लिखकर व्यक्त कर सकें। • प्रश्नों के उत्तर पूरे वाक्यों में लिख सकें।
	व्याकरण	• संज्ञा शब्दों की पहचान के साथ वर्गीकरण कर सकें। • सर्वनाम, विशेषण, पर्यायवाची, लिंग,वचन, मुहावरों की पहचान एवं प्रयोग कर सकें। • क्रिया की आरंभिक समझ बन सके।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• विभिन्न संदर्भों से संबंधित चित्र बना सकें एवं उचित रंग संयोजन कर सकें। • संदर्भ के अनुसार अभिनय कर सकें। • विभिन्न प्रकार की खाद्य सामग्री को एकत्रित कर उनके बनाने की विधि को जान सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। सुनी व पढ़ी कहानी, कविता, विशेष विषयवस्तु से सम्बन्धित एवं स्वतंत्र रूप से चित्र बना सकें एवं नाम दे सकें।

कक्षा – 4

पाठ संख्या	अधिगम क्षेत्र/आकलन सूचक	पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
		प्रथम टर्म
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 1–6.	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कहानी/कविता/परिवेशीय घटना से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सुनकर पूर्ण वाक्य में उत्तर दे सकें। • सुनी गयी कविता/कहानी का भाव अपने शब्दों में आत्मविश्वास के साथ कह सकें। • समूह चर्चा के दौरान तर्क के साथ अपने विचार रख सकें एवं दूसरे की बात को सुनने की क्षमता का विकास कर सकें। • विषयवस्तु से सम्बन्धित क्या, क्यों, कैसे वाले प्रश्न बना सकें एवं पूछने की क्षमता का विकास कर सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें। • प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर सटीक वाक्य संरचना के साथ व्यक्त कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • विविध प्रकार की वस्तुओं को बनाने की विधि, निर्देशों एवं सांकेतिक भाषा को पढ़कर समझ सकें एवं उपयोग कर सकें।
	लिखना	• विषय के अनुसार विचारों एवं अनुभवों को अपने शब्दों में लिख सकें। • संदर्भ के अनुसार क्या, क्यों, कौन, कैसे वाले प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में व्यवस्थित लिख सकें। • दृश्यात्मक चित्रों पर क्रमबद्धता के साथ कहानी का सृजन कर लिख सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें। • मेले, त्योहार, नगर दर्शन, कहानी कथा संदेश को अपने शब्दों में लिख सकें।
	व्याकरण	• सर्वनाम, वचन, लिंग, विलोम एवं क्रिया शब्दों की समझ के साथ वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • शब्दों में उपसर्ग को पहचान सकें एवं स्वयं के स्तर पर प्रयोग कर सकें। • विराम चिह्नों, योजक चिह्नों को पहचान सकें एवं उपयुक्त जगह पर सही चिह्न का प्रयोग कर सकें। • 'र' के विभिन्न प्रयोगों को समझ सकें व लेखन में प्रयोग कर सकें। • क्रिया एवं सर्वनाम की पहचान एवं समझ विकसित हो सकें। • संयुक्ताक्षर वाले वर्णों पर समझ बन सकें।

	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• विभिन्न प्रकार की वस्तुओं से विविध सामग्री बना सकें। • कहानी के पात्रों का अभिनय कर सकें एवं संवाद बोल सकें। • विविध सामग्रियों/जानकारियों का संकलन कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। • जल के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। • आसपास के जलाशयों की हालातों के बारे में कारण खोज सकें उनके व परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।
द्वितीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 7–9	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कहानी/कविता/परिवेशीय घटना से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को सुनकर पूर्ण वाक्य में उत्तर दे सकें व उनके भाव अपने शब्दों में आत्मविश्वास के साथ कह सकें। • समूह चर्चा के दौरान तर्क के साथ अपने विचार रख सकें एवं दूसरे की बात को सुनने की क्षमता का विकास कर सकें। • विषयवस्तु से सम्बन्धित प्रश्न बनाकर पूछने की क्षमता का विकास कर सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें। • प्रश्नों को समझकर उनके उत्तर सटीक वाक्य संरचना के साथ व्यक्त कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • विविध प्रकार की वस्तुओं को बनाने की विधि, निर्देशों एवं सांकेतिक भाषा को पढ़कर समझ सकें एवं उपयोग कर सकें।
	लिखना	• स्पष्टता के साथ विषय के अनुसार विचारों एवं अनुभवों को अपने शब्दों में लिख सकें। • प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में व्यवस्थित रूप से लिख सकें। • दृश्यात्मक चित्रों/विभिन्न विषयवस्तु से संबंधित कहानी का सृजन कर लिख सकें। • स्थानीय भाषा शब्दावली को मातृभाषा हिन्दी में रूपान्तरित कर सकें। • अनुस्वार (ं), अनुनासिक (ँ) एवं ण वाले शब्दों को सही रूप में लिख सकें।

	व्याकरण	• पर्यायवाची शब्द, विराम चिह्न और वचन का वाक्यों में प्रयोग कर सकें। • 'र' के विभिन्न रूपोंका लेखन में उपयुक्त प्रयोग कर सकें। • अनुस्वार (ं) अनुनासिक (ँ) एवं ण वाले शब्दों का आवश्यकता अनुसार उचित स्थान पर उपयोग कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• कहानी के पात्रों का अभिनय कर सकें एवं संवाद बोल सकें। • विविध सामग्रियों/जानकारियों का संकलन कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। • आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें • परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। • पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बन सकें।
तृतीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 10–13	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कविता, कहानी, आत्मकथा परिवेशीय घटनाओं को अपनी भाषा में उचित उतार–चढ़ाव के साथ एकल रूप में सुना सकें। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के जवाब आत्मविश्वास के साथ दे सकें। • चर्चा के दौरान अपनी बात को तर्क के साथ स्पष्ट शब्दों में रख सकें। • विविध प्रकार की जानकारियों को सुनने और जानने में रुचि दिखा सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें एवं परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ सकें एवं नवीन जानकारी ले सकें। • दृश्यात्मक चित्रों पर क्रमबद्धता के साथ चित्र कथा के संदेश को बता सकें।
	लिखना	• उचित शब्दावली का प्रयोग करते हुए सुन्दर व स्पष्ट शब्दों में स्वयं की आत्मकथा एवं यात्रा का वर्णन लिख सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें। • चित्र दृश्यों को देखकर क्रमबद्वता के साथ कहानी का सृजन कर सकें। • कल्पनात्मक प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिख सकें।

	व्याकरण	• सर्वनाम शब्दों, विशेषणों, पर्यायवाची शब्दों समानार्थी शब्दों संधि शब्दों, प्रत्ययों का उचित अनुप्रयोग कर सकें। • मुहावरों एवं प्रत्यय का इस्तेमाल समझ के साथ कर सकें। • 'र' के विभिन्न रूपों का लेखन में उपयुक्त प्रयोग कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अभिनय के माध्यम से अभिव्यक्ति दे सकें। • विभिन्न पशु–पक्षियों, फसलों, बीजों, खेती मे प्रयुक्त संसाधनों के चित्रों का संग्रह कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें। • परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। • राज्य पक्षी के संरक्षण में राय व्यक्त कर सकें।
चतुर्थ टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 14–15	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• विभिन्न विधाओं से संबंधित प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से आत्मविश्वास के साथ दे सकें। • चर्चा के दौरान अपनी बात को तर्क के साथ स्पष्ट शब्दों में रख सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • विविध प्रकार की जानकारियों को सुनने और जानने में रुचि दिखा सकें। • कविता/गीतों को ताल व हावभाव के साथ सुना सकें। • हास्य विधा, चुटकुले सुनकर एवं सुनाकर आनन्द की प्राप्ति कर सकें। • राज्य के वीर योद्धाओं की घटनाओं को रुचि से सुना सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य सामग्री को धारा प्रवाह गति के साथ पढ़कर मुख्य विचार एवं नवीन शब्दावली को ग्रहण कर सकें एवं परिवेशीय शब्दावली को पढ़कर संदर्भ से जोड़ते हुए अर्थ ग्रहण कर सकें। • जानकारी तथा मनोरंजन के लिए विविध प्रकार की पाठ्यसामग्री को पढ़ने की पहल कर सकें। • विभिन्न विधाओं के माध्यम से बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ सकें एवं नवीन जानकारी ले सकें। • पढ़ी हुई सामग्री में से प्रश्न पूछ सकें।
	लिखना	• उचित शब्दावली का प्रयोग करते हुए सुन्दर व स्पष्ट शब्दों में अपनी बात को लिखकर व्यक्त कर सकें। • तुकबंदी और संवादों का लेखन कर सकें। • विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त करने हेतु प्रश्नावली तैयार कर सकें।

		• कल्पनात्मक प्रश्नों के उत्तर स्वयं लिख सकें। • परिवेश की घटनाओं पर लेखन कर सकें।
	व्याकरण	• विराम चिह्नों एवं मुहावरों का इस्तेमाल समझ के साथ कर सकें। • अर्द्ध वर्ण पर समझ बनाकर उचित अनुप्रयोग कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन कर सकें। • नाटक तैयार कर प्रस्तुत कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें • परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

कक्षा–5

पाठ संख्या	अधिगम क्षेत्र/आकलन सूचक	पाठ्यक्रमणीय उद्देश्य/विषयवस्तु
		प्रथम टर्म
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 1 से 6	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कविता/बालगीत/निबंध आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर स्पष्टता से सुना सकें। • पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दे सकें। • चर्चा में अपने अनुभव सुना सकें और दूसरों के अनुभवों को सुन सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अपने अनुभव जोड़ते हुए विचार दे पाना।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• कविता, कहानी, चित्र कहानी, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धाराप्रवाहिता के साथ पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूल भाव एवं विचार को समझ सकें। • नवीन शब्दों को संदर्भ के साथ समझने के लिए शब्दकोष का उपयोग कर सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित संदर्भ पुस्तकों को पढ़ने की उत्सुकता दिखा सकें।
	लिखना	• पाठ्य सामग्री को पढ़ कर उसके अर्थ एवं मूल भाव को उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ लिख सकें। • चित्र को देख कर क्रमबद्धता के साथ लगभग 9–10 वाक्यों में विचार को लिख सकें। • पठित सामग्री का सार लिख सकें। • पढ़ी/सुनी लोककथा को स्वयं के स्तर पर लिख सकें।
	व्याकरण	• वचन की अवधारणा को समझते हुए एक वचन से बहुवचन बना सकें। • अनुनासिक एवं अनुस्वार के उच्चारण भेद को समझ सकें। • विशेषण, उपसर्ग को समझ सकें। • मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अभिनय कर सकें अपने पाठों के पात्रों के अनुसार। • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें। • पठित सामग्री का सार अपने शब्दों में लिख सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें। परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

द्वितीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 7 से 10	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर बता सकें। • पाठ्य सामग्री से सम्बन्धित प्रश्न पूछ सकें एवं पूछे गए प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्यों में दे सकें। • कक्षा–कक्ष में हो रही चर्चा में अपने अनुभव के आधार पर विचार रख सकें। • गीत/कविता का लय व आनन्द के साथ गायन कर सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अनुभव से जोड़ते हुए अपने विचार दे सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• चित्र, कविता, कहानी, अनुच्छेद, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धारा प्रवाह गति से पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूलभाव को समझ सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं से संबंधित संदर्भ पुस्तकों का अध्ययन कर सकें। • खोजपूर्ण जानकारी एवं अनुमान, कल्पना आधारित प्रश्नों को पढ़कर समझ सकें। • पाठ्य सामग्री को पढ़कर उसपर प्रतिक्रिया दे सकें।
	लिखना	• प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिख सकें एवं तर्क प्रस्तुत कर सकें। • विविध प्रकार की विषयवस्तु के संदर्भ में विस्तार से लेखन कर सकें। • लेखन में सुन्दरता एवं शुद्धता का ध्यान रख सकें। • तुकांत शब्दों का लेखन में प्रयोग कर सकें।
	व्याकरण	• पूर्व में सीखी गई व्याकरणिक अवधारणाओं का दोहरान करते हुए संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम, मुहावरों आदि का समझके साथ प्रयोग कर सकें। • अनेकार्थी शब्दों को समझते हुए उचित प्रयोग कर पाना। • मूल शब्दों में शब्दांश जोड़कर नया शब्द बना सकें। • विपरित अर्थ वाले शब्दों की पहचान कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अभिनय कर सकें (अपने पाठों के पात्रों के अनुसार) • पद्यांश का भावार्थ अपने शब्दों में लिख सकें। • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें। परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। अपने आस–पास के वातावरण को स्वच्छ रख सकें।

तृतीय टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 11 से 14	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर हाव–भाव सहित स्पष्टता के साथ सुना सकें। • चर्चा में अपनी बात को तर्क के साथ रख सकें एवं दूसरों की बात को सुन सकें। • नवीन जानकारियों को सुनने के प्रति उत्साहित हो सकें। • संवादों को सुनकर उनके प्रमुख तत्व को समझ सकें। • प्रश्नों को सुनकर समझते हुए उत्तर दे सकें और प्रश्न पूछ सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• पाठ्य सामग्री के मूलभाव को पढ़कर समझ सकें। • उचित गति एवं उच्चारण की शुद्धता के साथ पढ़ सकें और पढ़ी सामग्री के बारे में बात कर सकें। • साहित्य की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों को पढ़ने के प्रति रुझान बना सकें। • संबंधित सूचनाओं, निर्देशों एवं पत्रों को पढ़कर समझते हुए कार्य कर सकें। • बढ़ते क्रम में शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर सकें व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर सकें। • संवाद को पढ़कर समझ सकें।
	लिखना	• प्रश्नों के उत्तर विस्तार व तर्क के साथ लिख सकें। • पठित सामग्री के भाव को स्वयं समझ कर लिख सकें। • पत्र के प्रारूप को समझकर स्वयं पत्र लिख सकें। • संवाद लिख सकें।
	व्याकरण	• पूर्व में सीखी गई व्याकरणिक अवधारणाओं का दोहरान करते हुए क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान कर सकें एवं उनका प्रयोग कर सकें। • पर्यायवाची एवं विलोम शब्दों का प्रयोग कर सकें। • कारक चिह्नों को समझ के साथ पठन–लेखन में उपयोग कर सकें। • पर्यायवाची एवं विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर पाना। • संज्ञा, विशेषण, लिंग एवं वचन का इस्तेमाल समझ के साथ कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त कर सकें। (ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीज़ें हो रही हों।) • अभिनय कर सकें (अपने पाठों के पात्रों के अनुसार) • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें। परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें।

चतुर्थ टर्म		
पुस्तकालय एवं अन्य संदर्भ सामग्री तथा पाठ संख्या 15–16	सुनकर समझना और समझकर बोलना	• अपने आस–पास घटने वाली घटनाओं/अपने अनुभव एवं अपनी भावनाओं को 8–10 वाक्यों में उचित प्रवाह एवं नवीन शब्दावली के प्रयोग के साथ वर्णन करते हुए व्यक्त कर सकें। • नवीन जानकारियों को सुनकर समझकर अनुभव से जोड़ते हुए अपने विचार दे सकें। • विषयवस्तु से संबंधित तर्क संगत प्रश्न पूछ सकें एवं सुनकर क्यों व कैसे वाले प्रश्नों के तर्कसंगत उत्तर पूरे वाक्य में दे सकें। • कहानी/कविता/गीत आदि के अर्थ एवं भाव को समझकर हाव–भाव सहित स्पष्टता के साथ सुना सकें।
	पढ़ना और पढ़कर समझना	• चित्र, कविता, कहानी, अनुच्छेद, पहेलियों को स्पष्ट उच्चारण एवं उतार–चढ़ाव के साथ धारा प्रवाह गति से पढ़ सकें। • पाठ्य सामग्री के मूल भाव एवं विचार को समझ कर अभिव्यक्त कर सकें। • विभिन्न प्रकार की शब्दावली का संदर्भ के साथ अर्थ ग्रहण कर सकें व नवीन जानकारियाँ प्राप्त कर सकें। • पठन हेतु दी गई सामग्री को उचित गति व शुद्ध उच्चारण के साथ पढ़ सकें एवं पठित सामग्री को समझते हुए अपनी राय बता सकें।
	लिखना	• प्रश्नों के उत्तर विस्तार से स्वयं लिख सकें। • पहेलियों, लोकोक्तियों, लोककथाओं को खोजकर लिख सकें। • पढ़े गए संवाद को कहानी के रूप में स्वयं के स्तर पर लिख सकें। • पाठ्य सामग्री को पढ़ कर उसके अर्थ एवं मूल भाव को उचित विराम चिह्नों के प्रयोग के साथ लिख सकें। • संस्मरण लिखने हेतु प्रेरित हो सकें।
	व्याकरण	• पूर्व में सीखी गई व्याकरणिक अवधारणाओं का दोहरान करते हुए क्रिया और क्रिया विशेषण की पहचान कर सकें एवं प्रयोग कर सकें। • लोकोक्तियों को समझ सकें एवं पर्यायवाची,विपरीतार्थक शब्दों को संदर्भ के अनुसार प्रयोग कर सकें। • समानार्थी शब्दों को समझ सकें एवं अपनी भाषा में प्रयोग भी कर सकें। • लेखन में विराम चिह्नों का उचित प्रयोग कर सकें।
	सृजनात्मक अभिव्यक्ति	• अपने अनुभवों को चित्र द्वारा व्यक्त कर सकें (ऐसे चित्र जिनमें एक से अधिक चीज़ें हो रही हों)। • अभिनय कर सकें (अपने पाठों के पात्रों के अनुसार) • गीत/कविता को लय व हावभाव के साथ अभिव्यक्त कर सकें।
	परिवेशीय सजगता	• अपने परिवेश के प्रति सहज व सजग हो सकें। सामग्रियों के व्यर्थ उपयोग को रोकने की पहल कर सकें। आसपास की हालातों के बारे में कारण खोज सकें। परिवेशीय घटनाओं के प्रति राय व्यक्त कर सकें। • अपनी विरासत एवं पर्यटन स्थलों पर समझ व्यक्त कर सकें।

पाठवार अधिगम उद्देश्य

कक्षा –1

पाठ / इकाई	पाठवार अधिगम उद्देश्य	शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश
आरंभिक गतिविधियाँ : मेरा गाँव बाल गीत हमारा शहर पक्षी एवं जानवर फल सब्जी जानवर हमारा शरीर शरीर के अंग चित्र पठन	**बातचीत, कविताएं, जानकारी, कहानी चित्र पठन के माध्यम से** • मेरा गाँव और हमारा शहर पर चित्र के माध्यम से चर्चा, बातचीत करना। • चित्र एवं परिवेश के माध्यम से पक्षी एवं पालतूजानवर की पहचान कराना। • चित्र एवं व्यवहार के माध्यम से व्यावहारिक जीवन में उपयोग। • फल, सब्जी एवं जानवरों की जानकारी कराना। • रेखा चित्र एवं बुनियादी मोड़ पर अभ्यास करना। • शरीर के अंग एवं स्वच्छता पर बात करना। • अंगूठे के निशान से नए चित्रों का सृजन करना। • चित्र पठन के माध्यम से कहानी का विकास करना। • चित्रों को दिखाकर उनकी पहचान एवं आनन्द की अनुभूति कराना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • प्रत्येक बच्चे से चित्रों से संबंधित वार्तालाप एवं अपने विचार एवं अनुभव को अपने शब्दों में प्रस्तुत करना। • पशु पक्षियों की विशेषताएँ जानना तथा परिवेश में इनकी उपयोगिता को समझना।	8
1. घ र च ल **सूरज दादा** **2. अ ब म न**	**पाठ–1 घ, र, च, ल** • चित्र के माध्यम से शब्दों को पहचानना एवं पढ़ना। • कविता की पंक्तियों को अनुमान के आधार पर पढ़ना। • संबंधित शब्दों के वर्णों (घ, र, च, ल) की पहचान कराना। • परिचित शब्द व वर्ण को लिखने का अभ्यास करवाना। • बातचीत व कहानी के माध्यम से क्या, कौन, कब, कैसे वाले प्रश्न पूछ पाना व प्रश्नों के उत्तर दे पाना। **पाठ–2 अ ब म न** • चित्रों की पहचान कराना व उनके बारे में बातचीत करना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ बुलवाना। • चित्रों पर चर्चा करते हुए उनके बारे में जानकारी प्राप्त करना। • पूर्व के शब्दों एवं वर्णों का दोहरान करते हुए संबंधित शब्दों के वर्णों की पहचान करवाना। • परिचित वर्णों को लिखने का अभ्यास करवाना।	20

3. ज ख आ ा	पाठ–3 ज ख आ ा • चित्रों के माध्यम से शब्दों की पहचान करना । • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • चित्रों पर वार्तालाप करते हुए जानकारी प्राप्त करना। • संबंधित शब्दों के वर्णों की पहचान कराना। • परिचित वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • आ की मात्रा की अवधारणा के साथ मात्रा का प्रयोग कर लिखना व पढ़ना।	20
4. द त इ ि तितली और कली हमारे त्योहार	पाठ–4 द त इ ि • चित्रों एवं शब्दों की पहचान करना एवं उनपर बातचीत करना। • पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • शब्दों से संबंधित वर्णों की पहचान कराना। • परिचित वर्णों के लेखन का अभ्यास कराना। • आ की मात्रा का दोहरान एवं इ ि की मात्रा का परिचय कराना। • तितली और कली कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना। • हमारे त्योहार चित्रों पर चर्चा करना।	20
5. क स ई ी	पाठ–5 क स ई ी • चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • संबंधित शब्दों के वर्णों की पहचान कराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ई, ी की मात्रा का परिचय कराना। • आ व ई की मात्रा का प्रयोग करके शब्दों को लिखना व पढ़ना।	12
6. व ह ए े	पाठ–6 व ह ए े • चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ए, े की मात्रा का परिचय कराना। • आ, ई व ए की मात्रा का प्रयोग करके शब्दों को लिखना व पढ़ना। • चित्रों में रंग भरना।	12

7. थ प ओ ो	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ओ, ो की मात्रा का परिचय कराना। • आ, ई ,ए व ओ की मात्रा का प्रयोग करके शब्दों को लिखना व पढ़ना। • आ रे बादल कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।	10
8. ग उ य ु	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • उ, ु की मात्रा का परिचय कराना एवं उसका वर्णों के साथ प्रयोग करते हुए पढ़ना और लिखना। • आ, ई,ए,ओ व उ की मात्रा का प्रयोग करके शब्दों को लिखना व पढ़ना। • चित्रों में रंग भरना।	12
9. ट ऊ ध ू	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ऊ, ू की मात्रा का परिचय कराना व वर्णों के साथ उसका प्रयोग कर अभ्यास करना। • आ,ई,ए,ओ,उ व ऊ की मात्राओं का प्रयोग करके शब्दों को लिखना पढ़ना। • चित्रों में रंग भरना। • **"चुन्नू मुन्नू थे दो भाई"** कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।	10
10. श ठ ड ढ	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • चित्रों में रंग भरना। • चित्रों को देखकर स्थानीय बोली के नामों को लिखना।	10
11. झ भ ऐ ै	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ऐ, ै की मात्रा का परिचय कराना। सीखे गए वर्णों के साथ अभ्यास करना। • आ,इ,ई,उ,ऊ,ओ, ए, ऐ की मात्रायुक्त शब्दों का लेखन पठन करवाना।	8

12. छ भ औ ौ	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • औ,ौ की मात्रा का परिचय कराना। सीखे गए वर्णों के साथ मात्रा का अभ्यास करवाना। • आ, इ,ई,उ,ऊ, ए,ऐ,ओ,औ की मात्रायुक्त शब्दों का लेखन–पठन करवाना। • चित्रों में रंग भरना। • **देश की सेवा** कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।	8
13. ण ँ ष अं	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • अं एवं ँ की मात्रा का परिचय कराना। सीखे गए वर्णों के साथ अभ्यास करवाना। • सीखी गई सभी मात्रायुक्त शब्दों का लेखन–पठन करवाना। • **पंतग** कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना।	10
14. ऋ क्ष त्र ज्ञ	• चित्रों के माध्यम से नए शब्दों की पहचान करवाना।पूर्व में सीखे शब्दों का दोहरान करवाना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पूर्व परिचित एवं नवीन वर्णों को लिखने का अभ्यास कराना। • ऋ, क्ष, त्र, ज्ञ वर्णों के उच्चारण को समझाना और लिखने का अभ्यास कराना। • चित्रों में रंग भरना।	10
15. ङ ञ ड़ ढ़ अः	• सीखे गए वर्णों का दोहरान करवाना। • ङ, ञ, ड़,ढ़, अः नवीन वर्णों का परिचय एवं इनके उच्चारण को समझाना एवं लिखने का अभ्यास कराना। • पाठ के अन्त में दिए गए अभ्यास कार्य को करवाना। • सम्पूर्ण वर्णमाला को समेकित कर क्रमानुसार लिखवाना। • **इंदर राजा पाणी दो** कविता को हाव–भाव के साथ दोहराना एवं मौखिक रूप से बारिश के बारे में बातचीत करना।	20
16. शाकालाका बुम–बुम	• पाठ में आए चित्रों पर बातचीत करना। • कविता की पंक्तियों को सुनकर हाव–भाव के साथ दोहराना। • पाठ के अन्त में दिए गए चित्र में रंग भरना। • कविता को हाव–भाव के साथ बोलना एवं संबंधित मौखिक प्रश्नोत्तर करवाना।	20

कक्षा–2

पाठ / इकाई	पाठवार अधिगम उद्देश्य	शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश
पाठ 1 हमारी चाह (कविता)	• पुनरावृत्ति कार्य करवाना। • कविता को पढ़कर आनंद लेना और समूह में बोलना। • कविता को पढ़कर पाठ में दिये गए प्रश्नों के उत्तर ढूंढना। • शब्दों व चित्रों के मध्य सहसम्बन्ध स्थापित करना। • कविता को याद कर कक्षा कक्ष में सुनाने का अभ्यास करना। • ध्वनि के आधार पर नवीन शब्दों की पहचान एवं सृजन करना। • नवीन शब्दों के अर्थ जानना। • पढ़कर समझना व उसका आवश्यकतानुसार अनुप्रयोग करना। • अनुभव के आधार पर लेखन करना। • चित्रांकन करना व रंग भरना।	12
पाठ 2 खट्टे अंगूर (कहानी)	• कहानी को स्वयं पढ़ते हुए समझकर समूह में व्यक्त कर पाना। • अनुस्वार और अनुनासिक ध्वनि वाले शब्दों की पहचान कर बोलने का अभ्यास करना। • कहानी को कल्पना के आधार पर आगे बढाकर चर्चा करना। • पाठ में आये चित्रों पर अपनी पसंद के रगों का संयोजन करना। • विषयवस्तु के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर देना। • विषयवस्तु के अनुसार मुखौटे तैयार करना। • विषयवस्तु के आधार पर पक्षियों और जानवरों के मुखौटे बनाकर कहानी का रोल प्ले करना। • एक अनेक की पहचान करना।	10
पाठ 3 छोटे से बड़े (कविता)	• कविता को सुनकर आनंद लेना और लय ताल के साथ सुनाना। • पाठ में आये योजक चिह्नों से मिलकर बड़े शब्दों को पहचान कर उनके अर्थ को समझना। जैसे– हरा–भरा, उछल–कूद। • विषयवस्तु के आधार पर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर करना। • नवीनशब्दों के अर्थ जानना।	12

	• चुटकुलों आदि को पढ़कर आनंद लेना। • विषयवस्तु से संबंधित बिन्दुओं पर लेखन करना। • विषयवस्तु में आये शब्दों को परिवेश से जोड़ते हुए चर्चा करना।	
पाठ 4 मेघा पानी दे (कविता)	• कविता को सुनकर आनंद लेना और स्वयं लय ताल एवं हावभाव के साथ पढ़कर सुनाना। • विषयवस्तु आधारित प्रश्नों के उत्तर पूर्वावलोकन व अपने अनुभव के आधार पर समझकर लिखना। • कविता के अभ्यास में आये मौसम के चित्रों पर चर्चा कर समझ बनाना। • नवीन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग करना। • बारिश/पानी की महत्ता को समझते हुए 5–5 वाक्य लिखना। • छोटे प्रश्नों के उत्तर स्वयं खोजकर लिखना।	10
पाठ 5 स्नान (वार्तालाप)	• जल के महत्व को जानकर जल प्राप्ति के साधन पर बात करना। • जल के विविध उपयोग के बारे में चर्चा करना। • नित्य स्नान आदि कार्य में जल के मितव्ययता से उपयोग पर चर्चा करना। • जल के विविध स्थानों के बारे में बताना। • शुद्ध पेयजल की जानकारी प्राप्त कर सकना एवं बताना।	12
पाठ 6 तिरंगा (कविता)	• कविता को सुनकर आनंद लेना और स्वयं पढ़कर सुनाना एवं सुनना। • बच्चों में राष्ट्रप्रेम के भाव जागृत करना। • राष्ट्रीय पर्वों की महत्ता के बारे में चर्चा करना। • राष्ट्रीय प्रतीकों को पहचानना। • नवीन शब्दों को जानना व वाक्यों में प्रयोग करना। • संयुक्ताक्षर एवं संयुक्त व्यंजनों के उच्चारण को समझना व लेखन–पठन में उनका उपयोग करना। • ध्वजारोहण क्यों और कैसे पर वार्तालाप करना। • ध्वज के विभिन्न रंगो एवं अशोक चक्र के महत्व को समझकर लिखना। • राष्ट्र ध्वज एवं राष्ट्रीय प्रतीकों के प्रति सम्मान के भाव रखना। • अनुपयोगी वस्तुओं से खिलौने आदि बनाना।	12
पाठ 7 रक्षाबन्धन (निबन्ध)	• बच्चों से विभिन्न त्योहार पर चर्चा करना। • राष्ट्रीय पर्व एवं सामाजिक त्योहार में अंतर को समझना।	14

	• रक्षाबंधन पर निबधं लिख पाना। • राखी बनाना और उसको बनाने की प्रक्रिया को बताना। • त्योहारों के महत्व के बारे में लिख पाना। • प्रश्नों के उत्तर मौखिक रूप से देना। • लिंग व वचन की अवधारणा को समझना।	
पाठ 8 शीला का साहस (कहानी)	• कहानी को स्वयं पढ़ते हुए समझकर समूह में व्यक्त कर पाना। • चित्रों पर चर्चा करना। • बच्चों को अपने घर से विद्यालय तक आने वाले मार्ग के बारे में जानना। • माार्ग में आने वाले नदी नालों के बारे में जानना। • नदी नालों को पार करते समय की सावधानियों को जानना। • दूसरों की सहायता करने की भावना को समझना। • बच्चों में साहस व उत्तरदायित्व की भावना विकसित होना। • बच्चों अपने–अपने अनुभवों को शेयर करना। • विपरीत अर्थ वाले शब्दों को समझना व वाक्यों में प्रयोग करना। • सुलेख एवं स्वयं लेखन करना। • सड़क पर चलते समय सामान्य नियमों की जानकारी प्राप्त करना।	14
पाठ 9 सूरज का रूमाल (कहानी)	• विविध मौसम की जानकारी प्राप्त करना। • समूह में चर्चा करना। • वर्षा के बारे में अन्य सामग्री खोजना और पढ़ना। • वर्षा के मौसम में सावधानियों के बारें में जानना। • विविध प्रकार के फूलों के बारें में जानकारी प्राप्त करना। • विभिन्न परिधानों की जानकारी प्राप्त करना। • वर्षा के मौसम में होने वाले विभिन्न रोगों से अवगत कराना। • वर्षा से संबंधित गीतों का संकलन करना। • धरातल की जानकारी प्राप्त करना। • इन्द्रधनुष में बारे में जानना।	14

पाठ 10 रेल का खेल (कविता)	• कविता को सुनकर आनंद लेना और स्वयं पढ़कर सुनाना। • कविता को लय और ताल से आनंददायी वातावरण ही अनुभूति कराना। • कविता को स्वयं पढ़ते हुए समझकर समूह में व्यक्त कर पाना। • समान लय वाले शब्दों को खोजना, पढ़ना और लिखना। • विभिन्न यातायात के साधनों के बारे मे जानकारी प्राप्त करना। • खेल–खेल में रेल के महत्व को समझना। • र के विविध प्रयोगों को समझना। • रेल्वे स्टेशन और विभिन्न सिग्नलों के बारे में जानकारी प्राप्त करना। • चित्रांकन एवं रंगाकंन करना।	14
पाठ 11 शेर और चूहा (कहानी)	• कहानी सुनाकर आनंददायी वातावरण की अनुभूति कराना। • विभिन्न जंगली जानवरों की जानकारी कराना। • जीव जंतुओं के निवास, भोजन आदि के बारे में जानना। • समूह में से अलग की पहचान करना। • जानवरों के मुखौटे बनाने की प्रक्रिया को सीखना और कहानी के आधार पर अभिनय करना।	12
पाठ 12 बबूल बदल गया (कहानी)	• कहानी को पढ़कर आनंद लेते हुए समझकर समूह में व्यक्त कर पाना। • नये शब्दों के अर्थ समझकर अपनी भाषा में प्रयोग करना। • घटनाओं को क्रम से समझकर लिखना। • मुखौटे बनाकर कहानी को अभिनय के रूप में करना। • दो वाक्यों के मध्य अव्यय शब्द के प्रयोग को समझना । जैसे – और/तथा... आदि।	12
पाठ 13 चतुर चिडिया (कहानी)	• कहानी को पढ़ना और उसमें क्या बात कही जा रही है, उसको समझना। • परिवेशीय जानकारी के आधार पर जवाब देना। • पाठ में आये नवीन शब्दों के अर्थ को समझना और उनका अनुप्रयोग करना। • विषयवस्तु को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर देना एवं अपने विचारों को अभिव्यक्त कर पाना। • आपकाज महाकाज की जानकारी देना। • स्वयं कार्य करने के लिए प्रेरित करना ।	12

पाठ 14 चार चने (कविता)	• कविता को हाव भाव और लयबद्ध रूप में गाना। • कविता को स्वयं पढ़ना। • नवीन शब्दों के अर्थों को समझकर उनका अनुप्रयोग करना। • मुद्रा की पहचान कर उसके महत्व को समझना। • जीव जंतुओं के बारे में चर्चा करना। • जीव जंतुओं की आवाजें निकालकर अभिनय करना। • चित्रांकन एवं रंगाकंन करना।	10
पाठ 15 सपना सच हो गया (कहानी)	• कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना। • विषयवस्तु को समझकर प्रश्नों के उत्तर लिखना। • सामूहिक चर्चा में तर्क के साथ अपनी बात रखना एवं घटना के साथ स्वयं को जोड़ते हुए अपने विचाररखना। • पर्यावरण से संबंधित जीव–जन्तुओं के प्रति संवेदनशील होना। • नवीन शब्दों की जानकारी प्राप्त करना एवं उनका वाक्यों में प्रयोग करना। • विभिन्न प्रकार के प्रश्नों के उत्तर खोजना एवं लिखना।	20
पाठ 16 चॉद का कुरता (कविता)	• कविता को सुनकर आनंद लेना और स्वयं पढकर सुनाना। • नवीन शब्दों के अर्थों को समझना एवं उनका अनुप्रयोग करना। • चन्द्रमा की कलाओं के बारें में विस्तार से जानना । • विविध प्रकार के प्रश्नों के उत्तरों को स्वयं खोजना और लिखना। • चन्द्रमा की विभिन्न स्थितियों का चित्रांकन करना। • चन्द्रमा से संबंधित अनुभवों को समूह में सुनाना। • आकाशीय पिण्डों की जानकारी प्राप्त करना।	20

कक्षा–3

पाठ / इकाई	पाठवार अधिगम उद्देश्य	शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश
पाठ –1 देश की माटी (कविता)	• कविता को हावभाव के साथ सरस पाठ करना। • अपने अनुभवों को शेयर करना। • कविता को समझना व अर्थ के साथ सह संबंध जोड़ना। • कल्पना करते हुए प्रश्नों के उत्तर लिखना व विचारों की अभिव्यक्ति करना। • शब्दों के अन्त की ध्वनि के आधार पर नये शब्द बनाना। • भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन – विविध आधारों पर वर्गीकरण। • शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्दों की जानकारी करना।	12
पाठ–2 मीठे बोल (लोककथा)	• पढ़ने की रूचि जाग्रत होना व धाराप्रवाह वाचन करना। • पढ़कर कहानी को अपने शब्दों मे सुनाना। • कहानी के कथन संवाद पर पूछे गये प्रश्नों का विस्तार से उत्तर देना। • इसी प्रकार की कहानी सुनाने का प्रयास कराना। • पूर्व ज्ञान के आधार पर विभिन्न जानवरों के नाम को लिखना। • 'र' वर्णों के हलन्त रूप को समझना व लिखना।	10
विनती	• कविता के प्रति रूचि जाग्रत होना। • कविता को याद करना। • विनीत बनने की समझ आना। • कहानी से अपने अनुभव को जोड़कर बताना।	12
पाठ–3 शिष्टाचार (निबन्ध)	• निबन्ध को पढ़कर शिष्टाचार संबंधी जानकारी प्राप्त करना। • अपने आपको शिष्टाचार के अनुरूप ढालना। • शिष्ट आचरण का महत्व समझना। • पाठ को पढ़ कर परिवेश में शिष्ट आचरणीय वातावरण का निर्माण करना।	12
पाठ–4 समय सुबह का (कविता)	• कविता का धाराप्रवाह सरस आरोह अवरोह सहित पाठ करना। • कविता में प्रयुक्त नवीन शब्दों की जानकारी प्राप्त करना।	12

	• नित्य कर्म, शारीरिक स्वच्छता के प्रति सजग होना। • विभिन्न जानवरों की बोली की जानकारी होना। • अनुस्वार एवं अनुनासिक शब्दों की जानकारी होना व उच्चारण करना। • विभिन्न पुष्पों के रंगों की जानकारी कराना। • श,ष,ह का प्रयोग करना।	
पाठ–5 आओ खेलें खेल (निबंध)	• गद्य की विषयवस्तु का धारा प्रवाह वाचन कर सकना • खेलों के प्रति रूचि जागृत होना। • विभिन्न खेलों की जानकारी प्राप्त करना। • खेल के माध्यम से आपसी प्रेम की भावना जागृत करना। • आपसी सहयोग, अनुशासन, सद्भावना, धेर्य, साहस आदि गुणों का विकास कर सकना। • अर्द्ध वर्णों का उच्चारण कर सकना। • सर्वनाम शब्दों की जानकारी करना। • क्रिया रूप की जानकारी कर सकना। • पर्यायवाची शब्दों को समझना एवं प्रयोग करना। • मन पसंद चित्र बनाना एवं रंग भरना।	10
पाठ–6 आदमी का धर्म (संवाद पाठ)	• विभिन्न पात्रों के अनुरूप अपने आप को उपस्थित रख कर संवाद कर सकना। • प्रमुख शब्दों को विपरीत अर्थ की जानकारी प्राप्त कर सकना। • क्रिया के विविध रूपों की समझ	12
कबड्डी	• खेल के मैदान तैयार करने की रूचि जाग्रत करना। • चित्र को देखकर आनन्द का अनुभव करना।	
पाठ–7 कला का असंतोष (कहानी)	• गद्य पाठ का धाराप्रवाह वाचन कर सकना। • नवीन शब्दों की जानकारी प्राप्त करना। • कला के प्रति रूचि जाग्रत करना। • लगन एवं मेहनत से कार्य करने हेतु प्रेरित करना। • एक से अनेक, एक वचन से बहुवचन की जानकारी प्राप्त करना। • कागज की लुगदी से विविध सामग्री का निर्माण करना।	14

पाठ–8 गीत यहाँ खुशहाली के (कविता)	• कविता का सरस पाठ कर सकना। • कविता में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ जान सकना। • ग्रामीण परिवेश की जानकारी प्राप्त कर सकना। • खेत खलिहान, उत्सव त्योहारों की जानकारी प्राप्त कर सकना। • वचन को समझ कर स्वयं के स्तर पर शब्दों का निर्माण करना	14
पाठ–9 मै सड़क हूँ (आत्मकथा)	• गद्य पाठ का धारा प्रवाह के साथ वाचन कर सकना। • पाठ में प्रयुक्त नवीन शब्दों की जानकारी प्राप्त करना। • सड़क के बारे में जानकारी प्राप्त कर सकना।, • सड़क सुरक्षा व सड़क पर चलने के संकेतों एवं नियमों की जानकारी करना। • सड़क के आसपास के वातावरण, पर्यावरण की जानकारी करना। • पाठ के माध्यम से अर्द्ध विराम व पूर्ण विराम की जानकारी प्राप्त करना। • विशेषण के बारे में जानना • स्वयं के स्तर पर आत्म कथा लिखने का प्रयास करना।	14
कंजूस सेठ	• पढ़ने के प्रति ललक होना। • पढ़ी हुई कहानी को प्रार्थना सभा एवं समूह में सुनाना।	
पाठ–10 काठ की पुतलीः नीचे, गाएँ (संवाद	• नवीन शब्दों से परिचय कराना। • एकांकी के मंचन का प्रयास करना। • विभिन्न पात्रों का अभिनय एवं कार्यों की जानकारी प्राप्त करना। • मूल शब्द में शब्द जोड़कर नये शब्द बनाना। • कठपुतली संग्रहालय के बारे में जानकारी प्राप्त करना।	14
पाठ–11 अपना देश (कविता)	• कविता का आरोह अवरोह लय सहित सरस पाठ करना। • कविता में प्रयुक्त नवीन,कठिन शब्दों को जानना व उच्चारण करना। • भारत देश की विभिन्न विशेषताओं की जानकारी प्राप्त करना। • भारत देश की पहचान की जानकारी करना। • व्यावहारिक व्याकरण के माध्यम से एक शब्द के अनेक अर्थ जानना। • देश प्रेम की अन्य कविताओं का संग्रह करना। • संवाद को कहानी में रूपान्तरण करना। • र में उ,ऊ की मात्रा को समझना।	12

पाठ–12 साहसी बालिका (कहानी)	• पाठ का धाराप्रवाह, आरोह, अवरोह युक्त वाचन करना। • पाठ में प्रयुक्त नवीन शब्दों की जानकारी कराना। • देश की आजादी हेतु किए गए प्रयास की जानकारी कराना। • बालिका के साहस की जानकारी कराना। • अनुस्वार एवं अनुनासिक शब्दों को समझकर अपनी बोली एवं लेखन में प्रयुक्त करना। • पुस्तकालय में अन्य प्रकार की कहानियों को पढ़ना। • दर्शनीय स्थलों के चित्रों का संकलन कर कक्षा में प्रदर्शित करना।	10
अपनाओं अच्छी आदतें पाठ–13 अजमेर की यात्रा (यात्रावृतांत)	• शारीरिक स्वच्छता के बारे में जानना। • यात्रा वृतांत का आनन्द दायक रूप से आरोह, अवरोह युक्त वाचन करना। • अजमेर के विभिन्न स्थानों की जानकारी एकत्रित करना। • स्वयं की यात्रा को लिखकर अभिव्यक्त करना। • ऐतिहासिक, धार्मिक स्थानों के बारे में जानना। • धार्मिक परम्पराओं पर अपनी राय देना।	12
पाठ–14 अब बहुत बह चुका पानी (कविता)	• नवीन शब्दों की जानकारी करना एवं एवं उनका अनुप्रयोग करना।। • कविता का संवादात्मक अभिनय करना। • पारम्परिक कहानी का कविता के मूल भाव से तुलनात्मक अध्ययन कराना। • गलतियों से सीखकर काम करने की समझ बनाना। • कल्पनाशक्ति का विकास करना।	12
पाठ–15 अटल ध्रुव (कहानी)	• कहानी का प्रवाह के साथ पठन करना। • पाठ में आए नवीन शब्दों की जानकारी करना। • अभिव्यक्ति की क्षमता विकसित करना। • अन्य ऐतिहासिक कहानियों को समूह में सुनाना।	20
पतंगों का मौसम	• कविता को याद कर कक्षा में सुनाना। • कविता पढ़ कर आनन्द का अनुभव करना।	
पाठ–16 बताओं मैं कौन हूँ (निबन्ध	• नवीन शब्दों की जानकारी कराना • बिजली के बारे में जानकारी करवाना। • बिजली के विभिन्न उपकरणों की उपयोगिता एवं दुरूपयोग के बारे में जानना। • मूल शब्द के पूर्व में शब्द जोड़कर नये शब्द बनाना। • बिजली का अपने घर एवं पडोस में उपयोग के बारे में समझना।	20

कक्षा–4

पाठ / इकाई	पाठवार अधिगम उद्देश्य	शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश
पाठ–1 : सुख धाम (कविता)	• कविता को हाव भाव व उतार–चढ़ाव के साथ पढ़ना व गाना। • नवीन शब्दों को ग्रहण करना एवं अपनी भाषा में उनका इस्तेमाल करना। • विषय वस्तु को समझते हुए उस पर अपने विचार लिखना। • परिवेशीय वस्तुओं के साथ सहसम्बन्ध जोड़ना। • समूह चर्चा में अपनी बात को रखना व दूसरे की बात को सुनना। • शब्दों के अलग–अलग अर्थ को समझना एवं उचित सन्दर्भ के अनुसार प्रयोग करना। • संबंधित विषयवस्तु पर प्रश्न बनाना / पूछना। • और शब्द का दो वाक्यों में प्रयोग करना । • वाक्य में प्रयुक्त क्रिया शब्द एवं सर्वनाम शब्द को पहचान कर अलग करना।	12
पाठ– 2 बुद्धिमान खरगोश (कहानी)	• कहानी को पढ़कर आनन्द लेना एवं स्वयं के अनुभवों से जोड़ना। • परिचित लोगों से बातचीत कर सूचना एकत्र करना एवं समूह में बताना। • पढ़कर समझना एवं पढ़े हुए के भाव संक्षिप्त रूप में अपनी भाषा में समूह में सुनाना। • विषय के अनुरूप उसके कारण को समझते हुए चर्चा में भाग लेना। • विषयवस्तु का संक्षिप्तीकरण करना। • विभिन्न प्रकार के मुखौटे बनाना एवं मुखौटों के अनुसार अभिनय करना।	10
पाठ– 3 झीलों की नगरी (संस्मरण	• नवीन विधा से परिचित होना एवं पढ़कर समझना। • नवीन शब्दों से परिचित होना एवं शब्द भंडार को बढ़ाना। • विषयवस्तु के अनुसार अपनी बात को समूह में रखना। लिंग की अवधारणा को समझना और सन्दर्भ के आधार पर प्रयोग करना। • क्षेत्रीय भाषा को मानक भाषा में प्रयोग करते हुए संस्कृति के प्रति संवेदनशील बनना। • नगर दर्शन के वर्णन को पढ़ने के लिए प्रेरित होना और स्वयं लिखने का प्रयास करना।	12

सदा तिरंगा लहरे (कविता) नारियल की भैंट	• कविता पढ़ने सुनने के प्रति रूचि बनाना। • तुकान्त शब्दों को समझना एवं खोजबीन करना। • राष्ट्रीय ध्वज तिरंगे के मान–सम्मान व उसके संदेश पर समझ बनाना।	12
पाठ– 4 पेड़ (कविता)	• पेड़ के बारे में पढ़कर समझ बनाना एवं इसके उपयोग को जानना। • कविता को उचित भाव के साथ पढ़ना व उसके भाव को समझकर व्यक्त करना। • विषय वस्तु के आधार पर अपनी कल्पना की अभिव्यक्ति करना। • कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा करना। • आधे वर्ण की अवधारणा को समझते हुए अनुप्रयोग करना। • विलोम शब्दों को समझना एवं लेखन–पठन में प्रयोग करना। • समूह में अपनी राय देना।	12
पाठ – 5 दशहरा (निबंध)	• निबंध विधा की अवधारणा को समझना। • बहुभाषिक और बहुसांस्कृतिक संदर्भ से जुड़ना एवं नवीन जानकारी ले सकना। • त्योहार, उत्सव और मेलों के महत्व को समझना। • प्रमुख त्योहार एवं तिथियों को सूचीबद्ध करना। • उपसर्ग,प्रत्यय एवं लिंग को समझना एवं अपनी अभिव्यक्ति में अनुप्रयोग करना।	10
पाठ–6 हमें जलाशय लगते प्यारे (कविता)	• कविता को पढ़कर सुनाना एवं उसमें आनन्द लेना। • नए शब्दों को समझना एवं शब्दकोष बढ़ाना। • योजक चिह्न को समझना एवं संदर्भ के अनुसार प्रयोग करना। • जल एवं जलाशय के महत्व को समझना। • अपने आस पास के जलाशयों के बारे में जानकारी एकत्रित करना। • किसी विषयवस्तु पर निबंध लेखन करना। • प्रश्नोत्तर करना। • अपने परिवेश के प्रति सहज एवं सजग करना, हालातों के कारण खोजना तथा अपनी राय व्यक्त करना।	24
बड़ा बनने की कला (लघुकथा)	• पढ़ने के प्रति रूचि विकसित करना। • कथा कहानी को पढ़कर आनन्द लेना तथा समूह में सुनाना।	

पाठ – 7 वीर बालक अभिमन्यु (कहानी)	• कहानी को उचित प्रवाह के साथ पढ़ना एवं वर्तमान परिस्थितियों के साथ तुलना करना। • साहस एवं वीरता के अर्थ समझना तथा भाव को समझना। • प्रेरक प्रसंग चुनना तथा कक्षा एवं प्रार्थना में सुनाना। • संज्ञा शब्द एवं उनके भेद को जानना–समझना एवं लेखन में उचित प्रयोग करना। • विभिन्न ग्रथों एवं संबंधित महापुरूषों के बारे में जानकारी संग्रहण करना। • विभिन्न पंथो की समझ एवं सामाजिक सदभाव को समझना। • बदलते हुए शब्द का वाक्यों में प्रयोग करना।	16
पाठ – 8 आज मेरे छुट्टी है (नाटक)	• नाटक विद्या से परिचित होना तथा संवादों को उचित उतार–चढ़ावों के साथ पढ़ना एवं बोलना। • पाठ से संदर्भित प्रश्नों के उत्तर खोजकर स्वयं लिखना एवं संदर्भित अन्य प्रश्नों के उत्तर तर्क सहित लिखना। • नये शब्दों का अर्थ ग्रहण कर संदर्भ से समझना एवं उनका उपयोग करना। • 'र' के विभिन्न स्थानों पर हुए प्रयोग को समझना। • विराम चिह्नों, पर्यायवाची शब्दों को समझना एवं उनका सही प्रयोग करना। • वर्ग पहेली से शब्द ढूँढना। • इन्द्रधनुष के बारे में समझ विकसित करना। • चित्र बनाकर उचित रंग संयोजन करना। • किसी विषयवस्तु पर लेखन करना।	14
पाठ–9 खेजड़ी (कविता)	• नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग में लाना। • मानक भाषा एवं परिवेशीय बोली के मध्य सहसंबंध बनाना। • विषयवस्तु की समझ के आधार पर उपयुक्त शब्दों का चुनाव करना। • अनुनासिक बिन्दु को पहचानकर उसका प्रयोग करना। • संज्ञा और प्रत्यय पर समझ बनाना। • राजस्थान के राज्य वृक्ष, राज्य फूल, राज्य पक्षी, राज्य पशु के बारे में जानकारी संग्रहण करना।	16
चित्र कथा	• पढ़ने के प्रति रूचि होना। • पढ़ी हुई बात को अपने शब्दो में सुनाना एवं दूसरों को पढ़कर सुनाने की पहल करना। • आपसी सहमति एवं समझ विकसित करना।	

पाठ – 10 कूड़ेदान की कहानी, अपनी जुबानी (आत्मकथा)	• साहित्य की नई विद्या से परिचित होना एवं पढ़कर समझना। • नये शब्दों का अर्थ ग्रहण कर संदर्भ से समझना एवं उनका प्रयोग करना। • पाठ को पढ़कर बनी समझ के आधार पर विविध प्रश्नों के जवाब कारण सहित देना। • पर्यायवाची शब्द, सर्वनाम शब्द एवं विशेषण शब्दों को समझ के साथ प्रयोग में लाना। • चित्र पठन कर सही संदेश समझना एवं दूसरों तक पहुचाना। • किसी घटना/संदर्भ/विवरण एवं विषयवस्तु पर वाक्य लेखन करना। • अनुपयोगी सामग्री से चीजें बनाना।	12
पाठ– 11 मेरे गाँव के खेत में (कविता)	• कविता को भाव के साथ धाराप्रवाह की गति से पढ़ना एवं उसके भाव को समझना। • पढ़ी गई कविता के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना। • समानार्थी शब्दों को समझना एवं लेखन में प्रयोग करना। • विभिन्न फसलों, बीजों, खेती में प्रयुक्त संसाधनों का संग्रहण करना। • ग्रामीण परिवेश के हालातों का वर्णन करना एवं उन पर अपनी राय व्यक्त करना।	12
पाठ– 12 गोडावण (आत्मकथा)	• नई विधा को समझना। • विभिन्न लोगों द्वारा लिखी आत्मकथा को पढ़ने के लिए प्रेरित होना। • स्वयं आत्मकथा लिखने का प्रयास करना। • पढ़कर समझते हुए अपनी बात को व्यक्त करना। • 'र' के विभिन्न रूप व ध्वनि को समझ कर उसके। • विभिन्न रूपों का अपने लेखन व पठन में सहजता के साथ प्रयोग करना। • खोजबीन करना, सृजनात्मक अभिव्यक्ति करना एवं चीज़ों को संग्रहित करना।	12
देश हमारा (कविता)	• पढ़ने के प्रति उत्सुकता दिखाना। • पढ़कर कविता रूप में सुनाना।	4
पाठ–13 गुरू भक्त कालीबाई (कहानी)	• क्रिया रुप एवं संधि शब्दों को समझना एवं संदर्भ अनुसार उचित प्रयोग करना। • आस–पास के हालातों में घटित अत्याचार युक्त घटनाओं पर अपनी राय विकसित करना। • विषयवस्तु से संबंधित प्रश्नों के तर्क पूर्ण उत्तर लिखना व बताना। • कहानी सार व संक्षिप्तिकरण लिख पाना।	10

पाठ–14 निराला राजस्थान (कविता)	• कविता को धाराप्रवाह गति से समझना एवं कविता के भाव बताना। • राजस्थान की विशेषता एवं सांस्कृतिक वैभव से परिचय करना। • राजस्थान के महापुरूषों के योगदान, स्वामी भक्ति, वीरता एवं त्याग के भाव तथा चम्बल के तीर्थो की महिमा से परिचय करना एवं राष्ट्र वैभव के भाव विकसित करना। • राजस्थान के महापुरूषों से संबंधित प्रेरक प्रसंग संकलन करना। • अद्‌र्ध वर्ण पर समझ विकसित करना।	20
पाठ–15 : कुरज री विनती (लोककथा)	• पढ़कर आनन्द लेना और अपने परिवेश से सम्बन्धित लोककथाओं को जानने के प्रति उत्सुक होना। • नए शब्दों से परिचित होना एवं शब्दों का इस्तेमाल अपनी भाषा में करना। • परिवेशीय/क्षेत्रीय शब्दों को मानक भाषा में प्रयोग करते हुए समझना। • विषय वस्तु समझ कर उसके संक्षिप्त रूप को प्रस्तुत करना, सन्दर्भ के अनुसार अनुमान लगाना एवं अपने विचारों को मूर्त रूप देना। • प्रश्नों को समझ कर समस्या का समाधान ढूँढना। • सन्दर्भ के आगे व पीछे की बात को समझना। (घटना को क्रमबद्धता देने की समझ विकसित करना।) • परिवेशीय सजगता के साथ संवेदनशीलता के भाव को विकसित करना। • मुहावरों, विशेषण एवं वचन शब्दों को समझ के साथ प्रयोग करना। • विराम चिह्नों की अवधारणा पर समझ बनाना एवं लिखने व पढ़ने में प्रयोग करना। • स्थानीय लोक गीतों में पक्षियों वाले गीतों को खोजना एवं संबंधित पक्षी पर लिखे गीतों को गाना और संकलन करना। • विधि को पढ़कर समझते हुए वाद्‌य यंत्र बनाना। • स्थानीय वस्तुओं (कबाड़) से पसन्द के खिलौने बनाने की ओर अग्रसर होना।	20
चुटकुले	• पढ़ने की ललक होना एवं पढ़कर आनन्द लेना। • पढ़े हुए को कक्षा में सुनाने की पहल करना।	4
पुनरावृति कार्य	• अर्जित ज्ञान का सुदृढ़ीकरण एवं स्मृति विकसित करना। • पाठ्‌यवस्तु को हृदयंगम करना।	20

कक्षा–5

पाठ / इकाई	पाठवार अधिगम कार्य / उद्देश्य	शिक्षण एवं अभ्यास हेतु अनुमानित कालांश
पाठ –1 हम भारत के भरत (कविता)	• कविता को पढ़कर समझना एवं हावभाव व्यक्त करना। • पठित कविता के आधार पर अनुभव को शामिल करते हुए अपने विचार व्यक्त करना। • अनुनासिक एवं अनुस्वार युक्त शब्दों में अन्तर करना। • देशभक्ति के भावों से ओत–प्रोत अन्य कविताओं का संकलन करना। • अपने देश के प्रति अपनी जिम्मेदारी को व्यक्त करना। • एकवचन शब्दों के बहुवचन बनाने शब्दों की समझ बनाना। • स्त्रीलिंग एवं पुल्लिंग शब्दों को पहचानना।	12
पाठ–2 मेहनत की कमाई (कहानी)	• कहानी को धाराप्रवाह गति के साथ पढ़कर समझना। • कहानी से अपने अनुभव को जोड़कर बताना। • कहानी को अपने शब्दों में व्यक्त करना। • दी गई विषयवस्तु के अनुसार कहानी लिखना। • दिए गए शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द बताना। • शब्दों को सार्थक वाक्य में प्रयोग करना। • चित्रों के माध्यम से वाक्यों का क्रमवार सृजन करना।	10
पाठ–3 अपनी वस्तु (कहानी)	• कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना। • कहानियों को पढ़ने के प्रति उत्साह और पहल दिखाना। • इसी प्रकार की कोई कहानी सुनाना। • कहानी से अपने अनुभव को जोड़कर बताना। • कहानी को धाराप्रवाह गति के साथ पढ़ना। • चित्रों के माध्यम से वाक्यों का क्रमवार प्रयोग करना। • कहानी का सार अपने शब्दों में लिखना।	10
क्यों देते हैं नारियल की भेंट	• नारियल की भेंट के बारे में जान सकें। • नारियल के समान मनुष्य जीवन को बनाने की समझ पैदा करना।	

पाठ–4 त्योहारों का देश (कविता)	• कविता को सुनकर आनन्द लेना। • कविता को पढ़कर समझना एवं समझ के अनुसार उसके भाव व्यक्त करना। • भारत के विभिन्न त्योहारों को जानना। • भारत में मनाए जाने वाले त्योहारों की सूची बनाना। • पढ़ी गई विषय वस्तु के आधार पर प्रश्नों के जवाब लिखना।	12
पाठ–5 अनोखी सूझ (कहानी	• कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना। • कहानियों को पढ़ने के प्रति उत्साह और पहल दिखाना • नये शब्द समझना एवं उसका अपने लेखन में प्रयोग करना। • विभिन्न मुहावरों का अर्थ समझकर संदर्भ के अनुसार प्रयोग करना। • कहानी का सार अपने शब्दों में लिखना। • इसी प्रकार की कोई कहानी सुनाना।	12
पाठ–6 स्वस्थ तन सुखी जीवन (निबन्ध)	• निबन्ध को पढ़कर समझना एवं उसमें निहित भाव को व्यक्त करना। • निबंध पढ़कर स्वास्थ्य से संबंधित बातों को जानना नये शब्दों का अर्थ समझना एवं लेखन में संदर्भ के अनुसार उपयोग करना। • पाठ पढ़कर बनी समझ के आधार पर विविध प्रश्नों के उत्तर देना। • सर्वनाम शब्दों को समझना एवं उचित प्रयोग। • विशेषणों को समझ कर उचित प्रयोग करना।	12
कदरदान ई कदर करै	• कला के महत्व को समझना। • विभिन्न प्रकार की कला के प्रति रूचि जाग्रत हो सके।	12
पाठ–7 बालक का स्वप्न (कहानी)	• कहानी को पढ़कर समझना एवं वर्तमान परिस्थितियों के साथ तुलना करना। • नये शब्दों को समझना एवं लेखन में इनका प्रयोग करना। • विषय वस्तु को समझ कर प्रश्नों के उत्तर लिखना। • कहानी को पढ़कर समझना एवं समूह में सुनाना। • कल्पना अनुमान के आधार पर प्रश्नों के उत्तर देना।	14
पाठ–8 नया समाज बनाएँ (कविता)	• कविता को धाराप्रवाह गति से पढ़ते हुए समझना एवं हावभाव के साथ गाकर सुनाना। • कविता के केन्द्रीय भाव को समझना एवं समूह में व्यक्त करना। • नये शब्दों के अर्थ को समझकर संदर्भ के अनुसार प्रयोग करना। • अनुनासिक एवं अनुस्वार शब्दों की पहचान कर कविता में से छांटना • चिन्तन एवं कल्पना के आधार पर प्रश्नों के जवाब देना।	14

पाठ–9 सदाचार (निबन्ध)	• निबन्ध को पढ़कर समझना एवं मूल भाव को बताना। • निबन्ध में आए नये शब्दों का अर्थ समझते हुए स्वयं की भाषा में प्रयोग करना। • विषयवस्तु को स्वयं के जीवन एवं परिवेश से जोड़ते हुए जवाब देना। • सदाचारी व्यक्ति के गुणों की समूह में चर्चा करना एवं अपनी राय को व्यवस्थित ढंग से समूह में प्रस्तुत करना। • मूल शब्द में शब्दांशों को जोड़कर नया शब्द बनाना। • उपसर्ग एवं प्रत्यय को जानना। • विपरीत अर्थ वाले शब्दों को जानना।	14
कामधेनु	• गाय के बारे में जानकारी कराना	8
पाठ–10 नारी शक्ति की प्रतीक (जीवनी)	• साहित्य की नई विद्या से परिचित होना एवं पढ़कर समझना। • विभिन्न लोगों द्वारा लिखी जीवनी को पढ़ने के लिए प्रेरित होना। • देशभक्त नारियों के नामों एवं कार्यों का संकलन करना। • पाठ को पढ़कर बनी समझ के आधार पर विविध प्रश्नों के जवाब देना। • नये शब्दों का अर्थ ग्रहण कर संदर्भानुकूल प्रयोग करना।	14
पाठ–11 नीति के दोहे (दोहे)	• दोहों को उचित लय एवं गति से पढ़ना। • पढ़कर समझना एवं समझ के अनुसार भावार्थ बताना। • पढ़ी गई विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों के जवाब लिखना। • कबीर एवं रहीम के अन्य दोहों को पढ़ने हेतु प्रेरित होना। • अन्य कवियों के नीति के दोहों का संकलन करना। • दोहों को याद कर शनिवारीय सभा में सुनाना। • विशेषण की समझ एवं उचित प्रयोग करना।	12
पाठ–12 मजेदार कबड्डी (संवाद)	• संवाद को पढ़कर समझना एवं संवाद बोलने व लिखने के कौशल को जानना। • नवीन शब्दों की जानकारी होना एवं उन्हें प्रयोग के लाना। • प्रश्नों की समझ कर विषय वस्तु से ढूँढ कर लिखना। • तर्क के आधार पर अपनी बात समूह के समक्ष अभिव्यक्त करना। • कल्पना करके विभिन्न प्रकार के संवाद बोलना व लिखना। • विभिन्न पात्रों का अभिनय करना। • भारत के विभिन्न खिलाड़ियों के चित्रो का संकलन करना। • उपसर्ग को समझना एवं शब्द बनाना। • विलोम शब्दों को समझना।	12

खो–खो	• खेल के प्रति रूचि जाग्रत करना।	8
पाठ–13 किताबें (कविता)	• कविता को पढ़कर आनन्द लेना और उचित भाव के साथ गाना। • अपने आस–पास, दोस्तों आदि से चर्चा कर पुस्तकों के बारे मे जानकारी प्राप्त करना। • पढ़ी गई विषयवस्तु के आधार पर प्रश्नों के जवाब लिखना। • शब्दों की समझ एवं उचित प्रयोग करना।	12
पाठ–14 स्वर्ण नगरी की सैर (संस्मरण)	• विद्या से परिचित होना। • नये शब्दों का अर्थ ग्रहण कर संदर्भ से समझना एवं उनका प्रयोग करना। • चित्र देखकर स्वयं सृजन कर वाक्य लिखना। • अन्य संस्मरणों को पढ़ने के लिए प्रेरित होना। • पर्यायवाची शब्दों को समझना एवं लेखन में उचित प्रयोग करना। • पठित मुहावरों को संकलित करना।	10
पाठ–15 पन्ना का त्याग (कहानी)	• कहानी को पढ़कर समझना एवं वर्तमान परिस्थितियों के साथ तुलना करना। • विषय वस्तु को समझ कर प्रश्नों के उत्तर लिखना। • नये शब्दों को समझना एवं अपने लेखन में इनका प्रयोग करना। • वीरांगनाओं के बारे में जानना। • कहानी का सार अपने शब्दों में लिखना। • विराम चिन्हों को समझना एवं उचित प्रयोग करना। • विशेषण शब्दों को समझना शब्दों का रूप परिवर्तन कर नये शब्द बनाना। • स्वयं द्वारा नई कहानियों का सृजन करना।	20
पाठ–16 दृढ़निश्चयी सरदार (संस्मरण	• संस्मरण को पढ़कर समझना एवं अन्य संस्मरण पढ़ने के लिए प्रेरित होना। • महापुरूषों के चारित्रिक गुणों को जानना। • नये शब्दों के अर्थ को समझना एवं लेखन में उनका प्रयोग करना। • स्वयं संस्मरण लिखने हेतु प्रेरित होना। • महापुरूषों के चित्रों का संकलन कर स्क्रेप बुक बनाना। • विलोम शब्दों को समझना एवं उचित प्रयोग करना।	20
भारत का नक्शा	• भारत की सुन्दरता के बारे में जानना। • भारत के प्रदेशों के बारे में नक्शे के माध्यम से जानना। • सर्वधर्म समभाव को विकसित कर सके। • अनेकता में एकता।	